मैथिल ब्राह्मण वंशावली

एवम्

संस्कार

ॐ

मैथिल ब्राह्मण महासभा

ग्वालियर (म.प्र.)- 474 006

प्रकाशक

श्री मैथिल ब्राह्मण महासभा

बन्धु निवास, आजाद नगर, मुरार

ग्वालियर-४७४००६

तृतीय संस्करण १९९८

१०००

मुद्रक :

शिवालय प्रेस

ठाठीपुर, ग्वालियर-११

☎ : ३४५५२३

* मंगल कामना *

जिस जाति ने मानव को आधुनिक सभ्यता और संस्कृति की वर्णमाला दी मिथिला वंशावली, अवंतिका, पाटलिपुत्र आदि में अपनी अलौकिक प्रतिभा दिखलाई जिसकी चाल से इतिहास चला और जिनकी कल्पनाओं ने असंभव को भी संभावनायें दी वहीं आज शिक्षा और विज्ञान से दूर भागकर अपने मुंह की रोटी भी औरों से छिनवाकर आप मरणासन्न हों उसके लिये इस वंशावली में पांचजन्य का उदघोष "उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निने धात् उठो जागो और ध्येय की प्राप्ति तक रुको मत की कर्मठता के प्राण फूंकेगा। इसमें दो मत नहीं।" सर्वान धर्मान् परित्यज्यमाम एक शरणं वृज: बाले गीत के स्वर इस वंशावली में मुखर हो उठे हैं और वह धर्म है शिक्षा कर्मठता और उद्योग जिसके पीछे लक्ष्मी और प्रतिष्ठा दासी बन कर घूमती हैं। भगवान करें उन ऋषियों के गोत्रों के नाम अपनी स्वभाविक तेजस्विता को हममें लावे ताकि हम अपने गोत्रों को सार्थक कर सकें।

पुस्तक में दैनिक उपयोग के मन्त्रों को लेकर उसमें चार चाँद लगा दिये हैं लेखक की खोज का भागीरथी प्रयत्न प्रशंसनीय है और सहाय है वे उदार मन दान दाता कि जिनके बूते पर हमारे ऋषियों के अध भूले नाम फिर उजागर हुए। उन सब को पुन: इस बंशावली के प्रकाशन के जाति यज्ञ की सफलता के लिए मेरा शत शत अभिनन्दन और शत-शत नमन है।

दिनेश पारीवाल

उपकुलपति
तपोवन विद्यापीठ एवं प्राचार्य
स्नातकोत्तर कला वाणिज्य एवं
विधि महाविद्यालय
वारां शिवनी (म० प्र०)

भू.पू. सदस्य कार्यकारिणी समिति
सागर विश्वविद्यालय सागर
संचालक
अरण्य भारती विद्यापीठ वैहर

दो शब्द—

अति उत्साही एवं कर्मठ व्यक्तियों के अथक श्रम से ही समाज एवम् राष्ट्र का उभ्युत्थान होता है। इसमें लवलेश मात्र शंकाओं का स्थान नही हैं कि जिस परम पुनीत समाजोद्धारक एवम् विश्व कल्याण की भावना से श्री लालाराम ओझा तथा श्री मक्खनलाल जी ओझा ने "मैथिल ब्राह्मण वन्शावली एवम् संस्कार" नामक पुस्तिका का प्रकाशन कर रहस्यमयी मैथिल संस्कृति का निस्वार्थ भाव से विश्व के सामने प्रकाश पुन्ज का प्रसार-प्रचार कर आदर्श प्रस्तुत किया हैं। इससे यत्र-तत्र स्थित समस्त मैथिल समाज उपकृत होगा तथा वह अपना वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कर गर्वाविंत होकर उन्नत मस्तिष्क से विश्व में विचरेगा। यह बात ध्रुव सत्य है कि बिना अपनी वंशावली ज्ञान के कोई भी प्राणी इस सन्सार मैं अपना अस्तितव कायम नहीं रख सकता। अतएव अपनी वंशावली एवम् अपना कर्तव्याचरण का ज्ञान कर समस्त मैथिल वृन्द सुप्रशंसा पथ गामी बन कर ही रहेगा। इसलिए मैं लेखक एवम् सहायकों को अपने शुभाशीवचन के दो शब्द से आभार व्यक्त करने में अपने को पुण्यवान मानता हूँ समिति।

बालेश्वर झा (ज्योतिषाचार्य)
सेवानिवृत प्राचार्य
शास० संस्कृत कॉलेज, ग्वालियर (म. प्र.)

प्रिय

पाठक वृन्द

❀❀

अतीत की गहराई में अनेक रत्न छिपे पड़े हैं, पर जिसने गोते लगाये हैं वही इन रहस्यों को जान पाया है। इससे चंचल मन मस्तिष्क में स्थिरता व निर्मलता आती है। अंतःकरण में अदम्य साहस शक्ति, स्वाभिमान व कर्तव्य निष्ठ साधना के साथ-साथ जीवन की सार्थकता का आभास होने लगता है जनमानस के प्रति अटूट श्रद्धा सहिष्णुता सहयोग समन्वय जैसे सद्गुणों का विकास होने लगता है तथा भविष्य की ऊँचाईयां छूने की इच्छा वलबती होने लगती है। मन में अनुपम उत्साह व लगन से समर्पित सेवा भावना की प्रेरणा मिलती हैं। ●

लेखक

❁ अनुक्रमणिका ❁





लालाराम ओझा

एम.ए. साहित्य रत्न

मैथिल ब्राह्मण वंशावली एवं संस्कार

तृतीय संस्करण

भारतीय मनीषियों ने गहन चिन्तन एवं अनुभव के फलस्वरूप व्यक्ति की औसत आयु शतायु मान चार सोपानों में विभक्त किया ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास। इसी प्रकार समस्त मानव समुदाय को भी बौद्धिक क्षमता योग्यता कार्य क्षमता अभिरुचि के अनुरूप गुणों की प्रधानतानुसार चार वर्णो में बांटा गया ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य एवं शूद्र। इस विभाजन से अधिक धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, शिक्षा संस्कृति आदि सभी क्षेत्रों में परस्पर सौहृदर्य पूर्ण जीवन यापन होता था वहीं पारस्परिक श्रद्धा, स्नेह, सभ्यता के साथ मिलकर रहते थे। कालांतर में परिवर्तन हुआ सभी ने अपने उच्च आदर्शो का परित्याग कर वैमन्यस्यता, विषमता के बीज बोए उसका लाभ विदेशियों को मिला और हम परतन्त्र हुये। हमारी संस्कृति साहित्य, कला, सभ्यता का विनाश हुआ बलात् धर्म परिवर्तन लूट मार हत्याओं का सिलसिला चलता रहा और हम मूक द्रष्टा बने सब कुछ देखते रहे।

आधुनिक युग में हमको अपने सर्वांगीण विकास का अवसर मिला हमारा कर्तव्य है कि हम सब परस्पर मिल देश को समृद्धशाली बनावें तथा सबको विकास का अवसर मिले। सभी स्वाभिमानी जीवन जीना चाहते हैं यह उनका नैतिक अधिकार है सम्मानयुक्त जीवन यापन करना तथा इसी प्रकार के व्यवहार

की अपेक्षा रखना भी हमारा कर्तव्य है। अपनी योग्यता पर सभी को गर्व होता है सभी सामाजिक प्रतिष्ठा चाहते हैं। सामान्य लोगों तक इसका ज्ञान होना भी आवश्यक व अनिवार्य है।

व्यक्ति स्वयं ही अपने उत्थान व पतन का कारण बनता है उसकी मानसिक वृत्ति, व्यवहार, आचरण यदि उदार नम्रप्रस्थ सत्व गुण से प्रभावित है तो वह समाज में अपना स्थान बना सकता है तथा सम्मान का पात्र बन पाता है यदि उसमें हीन भावना घर कर गई है स्वयं के समझने व सोचने की शक्ति क्षीण हो गई है तो ऐसा व्यक्ति कभी भी कहीं भी सम्मान का पात्र नहीं बन पाता सब कुछ मन:स्थिति अथवा मानसिकता पर निर्भर करता है।

वंशावली में विस्तृत ब्यौरा दिया गया है साथ ही प्रमुख संस्कार यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार दिया गया है जिससे द्विज कहलाने का अधिकार बनता है व गायत्री मन्त्र व नित्य के मन्त्र दिये हैं।

प्रथम एवं द्वितीय संस्करण समाज के सामने पहुँचे जिससे जाग्रति आई सामाजिक स्थिति का ज्ञान हुआ इसी अभिरूचि को बनाये रखने के लिये तृतीय संस्करण का प्रकाशन अनिवार्य हो गया। इस कार्य में श्री मक्खन लाल ओझा लश्कर, श्री रामदास जी हजीरा, एवं श्री भटरेलाल झा विज्ञानाचार्य मुरार का विशेष सहयोग मिला साथ ही झाँसी निवासी पं. श्रवणकुमार दुबे से महत्बपूर्ण सामग्री उपलब्ध हुई जिससे

पुस्तक का आकार मिला। मैं इन सभी महानुभावों का हृदय से आभारी हूँ। द्वितीय संस्करण में पं. श्री रामदास झा एडवोकेट पिछोर, पं. रामसेवक झा शिक्षक पिछोर द्वारा अधिक आवश्यक जानकारी प्राप्त होने से पुस्तक अधिक उपयोगी बनाने में मदद मिली पं. भी बधाई के पात्र हैं। इस संस्करण में श्री बाबूलाल झा, सिंहपुर रोड, मुरार का कार्य भी विशेष सराहनीय रहा जिन्होंने अपनी पैनी दृष्टि से अनेक त्रुटियों को निकाल वाक्यों व शब्दों को शुद्ध रूप प्रदान कर अपनी विद्वता का परिचय दिया।

भाषा सरल शुद्ध एवं बोधगम्य है। स्थान भेद के कारण ग्राम गोत्रों के उच्चारण में भिन्नता पाई जा सकती है कृपया विज्ञ पाठक उसमें सुधार लाकर उपयोग में लायेंगे ऐसी आशा है

अन्त में उन सभी सज्जनों का हृदय से आभार मानता हूँ। जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से इस पुनीत कार्य में हाथ बंटाया।

भवदीय

लालाराम ओझा

(एम. ए. साहित्य रत्न)

बन्धु निवास, आजाद नगर, मुरार

ग्वालियर-474006

ध्यान रहे–

आंतरिक प्रेरणा का श्रोत मन है। संकल्प - विकल्प इसका स्वभाव है। मानव की व्युतपत्ति का कारण भी मन ही है। राम, कृष्ण, दधीचि, बुद्ध ऐसे मानव हुये जिन्होंने जन कल्याण हितार्थ अपने सुखों का परित्याग कर सम्पूर्ण जीवन उत्सर्ग कर दिये वे ही महान आत्माएं आज देवता महामानव विभूति के नाम से हमारे स्मरणीय व पूज्यनीय बने जिनके पद चिन्हों पर चलने का यत्न करते हैं। दूसरे बे मानव थे जैसे रावण, कुम्भकर्ण, कंस आदि जिन्होंने व्यक्तिगत सुखों के लिये मनुष्यों पर अनेक जुल्म ढाये आज वे दानव या राक्षस के नाम से जाने जाते हैं तीसरे वे मनुष्य है जो केवल खाओ पियो मौज करो, के अनुसार कीड़े-मकोड़े की तरह से जी रहे हैं जिनका अपना कोई अस्तित्व नहीं है।

याद रहे–

मन गिरना या हीनता, भ्रांति अथवा विकार आना पतन के कारण होते हैं इनसे ग्रसित व्यक्ति किंकर्तव्यविमूढ हो हताश कुंठित व संकुचित बन जाता है उसका मनोबल गिर जाता है। अतः व्यक्ति को अपनी मनोवृत्ति में बदलाव लाकर पूर्ण आत्म बल से कर्म निष्ठ हो प्रयत्नशील रहना चाहिये तथा साहस के साथ अतीत के गौरव की पुनः स्थापना के लिये आगे बढ़ना चाहिये। यही जीवन की सफलता है। इसी में जीवन की सार्थकता है। अन्यथा नहीं।



वंशावली

धरती पर मानव की उत्पत्ति कब से आरंभ हुई इस सम्बन्ध में स्पष्टत: कुछ नहीं कहा जा सकता पर प्राचीन ग्रन्थ जैसे संस्कृत, भविष्य पुराण, लिंगपुराण, विष्णुपुराण, श्री मदभागवत एवं महाभारत में विभिन्न प्रकार से लिखा पाया जाता है उसी आधार पर संक्षेप में लिखा जा रहा है

सर्व प्रथम परमात्मा ने ब्रह्मा को पैदा किया तत्पश्चात् ब्रह्मा को सृष्टि रचना की इच्छा जाग्रति हुई और दस पुत्र पैदा किये। जिनके नाम मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त, पुलह, क्रतु भृगु वशिष्ठ, दक्ष और नारद हैं। इसके बाद कर्दम ऋषि, धर्म स्वांभमनु और शतरुपा को जन्म दिया।

स्वांभमनु से २ पुत्र प्रियवृत और उत्तानपाद तथा ३ पुत्रियां आकूती, प्रसूति व देवहूति पैदा हुई।

देवहूति कर्दम ऋषि को विवाही जिससे ९ पुत्रियाँ व १ पुत्र कपिल पैदा हुऐ। जिन्होंने सांख्य शास्त्र की रचना की।

कर्दम ऋषि की ९ पुत्रियां क्रमश: कला मरीचि को, अनुसूया अत्रि को श्रद्धा अंगिरा को, हविभू पुलस्त को, गति पुलह को, क्रिया क्रतु को ख्याति भृग को अरुधती वशिष्ठ को शांति अथर्व को विवाही गई।

आकूति रुचि को विवाही जिससे १२ पुत्र पैदा हुए। प्रसूती का विवाह दक्ष से हुआ।

मरीचि के पुत्र कश्यप व पूर्णमान हुये। पूर्णमान के विरज विश्वग और एक कन्या का जन्म हुआ। कश्यप के वत्सर पैदा हुये आगे चलकर इसी वंश की वृद्धि हुई।

अत्रि से दत्तात्रेय, दुर्वासा व चन्द्रमा पैदा हुये। अंगिरा से चार पुत्रियां व दो पुत्र उतथ्य व वृहस्पति जन्मे। पुलस्त से अगस्त व विश्वा पैदा हुये। विश्वा से कुबेर, रावण, कुम्भकर्ण व बिभीषण पैदा हुये। पुलह से ३ पुत्र क्रतु से वाल्यखिल्य व वशिष्ठ। वशिष्ठ से ७ ब्रह्मर्षि पैदा हुये। भृगु से २ पुत्र व लक्ष्मी पैदा हुई।

दक्ष प्रजापति की १० कन्यायें धर्म को १३ कश्यप को २७ चन्द्रमा को व एक शंकर को बिवाही। इनसे सृष्टि का विस्तार होता गया।

सृष्टारंभे ब्राह्मणस्य, जातिरेका प्रकीर्तित:
एकं पूर्वं जातिरेका देश भेदा द्विधाऽभवत्

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड)

सृष्टि के आरंभ में ब्राह्मणों का एक ही वर्ण कहा गया है। यानी एक हो प्रकार के ब्राह्मण थे अनन्तर देश काल भेद से दो प्रकार के हो गये गौड देश में रहने वाले गौड ब्राह्मण तथा द्राविड देश में रहने वाले द्राविड ब्राह्मण कहलाये।

गौड द्राविड भेदेन तपो भेदा दश स्मृता;
बिशंतर शतम विप्र: द्विभेदाच्वं ततोऽभवत

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड)

अब इन दो भेद वाले ब्राह्मणों से दस भेद हुए अर्थात पंच गौड तथा पंच द्राविड । आगे चलकर १० से १२० प्रकार के हुए आगे चलकर तो अनेक प्रकार के बन गये जिनका ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड व ब्राह्मणोत्पत्ति निर्णय ग्रन्थ में मिलता है ।

दस विधि ब्राह्मण

कर्नाटकाश्च तैलंग, महाराष्ट्राश्च द्राविडा ।
गुर्जराश्चैव पंचेव द्राविड़: विंध्य दक्षिणे ॥
सारस्वत: कान्यकुब्जा: गौड उत्कल मैथिला ।
पंच गौडा: इतिख्याता विन्ध्योत्तर वासिना: ॥

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड)

कर्नाटक तैलंग महाराष्ट्र द्राविड गुर्जर ये पंच द्राविड कहलाये जो विन्ध्याचल के दक्षिण देशों में निवास करते हैं । सारस्वत कान्यकुब्ज, गौड, उत्कल और मैथिल ये पंच गौड कहलाये जो विन्ध्याचल के उत्तर देशों में निवास करते हैं ।

पंच गौड ब्राह्मणों के स्थान

(१) सारस्वत देश—वर्तमान पंजाब को कहते थे ।
(२) कान्यकुब्ज —कन्नोज, अयोध्या, दिल्ली आगरा तक था ।
(३) गौड —बंगाल बिहार प्रांत कहे जाते थे ।
(४) उत्कल —उड़ीसा प्रांत को कहते थे ।
(५) मैथिल —तिरहुत जो कौशिकी से गंडकी नदी तक का क्षेत्र जो आजकल बिहार प्रांत में है ।

पंच द्राविड़ ब्राह्मणों के स्थान

१. कर्नाटक—जमुना के दक्षिण और सहयाद्रि पर्वत की घाटियों के उत्तर में है।

२. तैलंग —गोदावरी व जमुना के बीच का देश है।

३. द्राविड़ —वर्तमान तमिलनाड प्रांत को कहते थे।

४. महाराष्ट्र-वर्तमान महाराष्ट्र प्रांत है।

५. गुर्जर —गुजरात व कुछ मालवा व खान देश है।

काशी स काशीदिशान्ये ह्याग देश समीपतः।
देशा जनक नामा वै यन राजा निमिः स्थितः॥

(ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड)

काशी के ईसान कोण में अंग देश के समीप जनक राजा का देश है। इसका नाम मिथिला है। अंगदेश वैद्यनाथ के समीप है जो बिहार प्रान्त में हैं। यहां के राजा निमि ने मोक्ष पाने के उद्देश्य से यज्ञ कराने का संकल्प लिया। गुरु विशिष्ठ अन्यत्र धर्मानुष्ठान में व्यस्त रहने के कारण यज्ञ कार्य सम्मन्न कराने में असमर्थ थे। राजा ने इच्छानुसार अन्य ब्राह्मणों से यज्ञ कार्य पूरा करा लिया।

कुछ समयोपरांत गुरु वशिष्ठ राजा के पास आए, जब गुरु को पता चला कि मेरी अनुपस्थिति में राजा ने यज्ञ कार्य कराया है। तो उनका क्रोध ठिकाने न रहा और राजा को श्राप दे दिया राजा ने भी वशिष्ठ को श्राप दिया अतः दोनों ने अपने शरीर का त्याग कर दिया।

ब्राह्मणों ने सोचा बिना राजा के देश की व्यवस्था बिगड़ जायेगी उन्होंने मंत्र बल से राजा को जीवित कर लिया पर राजा ने कहा मेरे वंश के लोग आप लोगों का प्रतिपालन करेंगे इस तरह फिर शरीर त्याग दिया।

अब ब्राह्मणों ने योगवल से मृत राजा के शरीर का मंथन किया जिससे एक दिव्य देहधारी पुरुष पैदा हुआ। मृतक देह से उत्पन्न होने के कारण उसका नाम विदेह पड़ा। देह के मंथन से पैदा होने से मैथिल नाम हुआ उसी ने मिथिला देश व जनकपुर नगर बसाया जिन ब्राह्मणों ने यज्ञ कराया था वे मैथिल ब्राह्मण कहलाये। बाद में वशिष्ठ ने मित्रा वरुण के बीर्य से उर्वसी के गर्भ से जन्म लिया। (यह कथा बालमीक रामायण एवं ब्राह्मणोत्पत्ति मार्तण्ड में है।

मैथिल ब्राह्मणों का वंश

ब्रह्मा के पुत्र दक्ष प्रजापति हुये। दक्ष की दस कन्याऐं धर्म को विवाही जिनके नाम इस प्रकार है।

किससे वंश चला	स्त्री	पुत्र	पुत्री	ग्रंथ का नाम
दक्ष प्रजापति	प्रसूती (वैदिनी)		१ ककुव	७४ वां अध्याय भविष्य पुराण
			२ भानु	६३ वां अध्याय लिंग पुराण
			३ वसु	६५ वां अध्याय आदि पर्व
			४ यामो	महाभारत
			५ लम्बा	
			६ मृत्युवंती	

७ संकल्पा
८ बिश्वा
९ संध्या
१० मुहूर्ता

यह दस कन्याऐं ब्रह्मा के पुत्र धर्म को विवाही गईं। धर्म की वसु नामक स्त्री से बसु नाम का पुत्र पैदा हुआ। वसु के आठ पुत्र पैदा हुए क्रमशः

किससे वंश चला	स्त्री	पुत्र	पुत्री	ग्रंथ का नाम
वसु	बिश्वा	१ आपदेवता २ ध्रुव ३ सोम ४ घर	५ अनिल ६ अनल ७ प्रत्यूष ८ प्रभात	पूर्ववत

बसु के आठवें पुत्र प्रभात का विवाह अंगिरसी से हुआ इस से पैदा हुये क्रमशः

प्रभात	अंगिरषी वृहस्पति की बहिन	१ अजैकपाद २ अहिर्वुंध ३ त्वष्टा ४ रुद्र ५ बहुरुप ६ त्र्यंबक ७ अपराजित ८ वषाकपि ९ शम्भु १० कपंदीवरे

प्रभात के तीसरे पुत्र त्वष्टा से महन्त, दमन विश्व रूप तीन पुत्र पैदा हुये तथा संज्ञा नामक पुत्री का जन्म हुआ। विश्व रुप देव गुरु बने। जिन्होंने दानवों का संहार किया।

महन्त दमन व विश्वरुप से ही मैथिल ब्राह्मणों का वंश चला।

त्वष्टा	विरोचन की वहिन	१ महन्त	संज्ञा पूर्ववत
		२ दमन	जो सूर्यनारायण
		३ विश्वरुप	को विवाही गई

मैथिल ब्राह्मणों के मूल ग्राम गोत्र, ऋषि गोत्र, आस्पद या पदवी शाखा, प्रवर, सूत्र, उपासना आदि प्राचीन वंशावली के आधार पर दिये जा रहे है जो दरभंगा से लगाकर सारे उत्तर भारत व मध्य प्रदेश में फैले है। इस प्रकार से है :—



१. भारद्वाज पदवी शुक्ल

ब्रह्मा के मानस पुत्र अंगिरा हुये। उनके पुत्र भरद्वाज व उनके भारद्वाज हुऐ। भारद्वाज के पुत्र दमन हुए। उनके वंश में उत्पन्न मैथिल ब्राह्मणों के गौत्र इस प्रकार से है।—

१. इनामियां २. इन्द्रलोक ३. दूरन ४. ईगन ५. उपमावासी ६. खरवालिया ७. खरबोलिया ८. खडिहा खडोरे ९. खुदिहा खुरिहा १०. गगोरे गोबारे ११. चुरहा १२. चौगयां १३. चोंचहा १४. चौदह बासिया १५. डाजन्या १६. डायलबाल १७ देढवाल डेढोलिया १८. ढालन पुरिया १९. ढमढिरिया २०. ढोर वाले २१. दनेवादायम २२. दमकरिबारे २३. दमघीवा २४. धनौली धौरा २५. पिपलौदा २६. पीलनियां २७. पुरानियां पुडनियां २८. पुरोहित २९. फरणोदिया ३०. बगोरया बगरिहा ३१. बरसावा ३२. बिलगयां ३३. बिलास पुरिया ३४. बेम्बतो ३५. भृगुआश्रम ३६. मछरिहा ३७ मम्मीवाल ३८. महारन ३९. महीबाल ४०. महाबरिया ४१. मद्दीप ४२. मालण ४३. मालवीय ४४. मोरिया ४५. सामरिया ४६. सुखवतिया ४७. सूरबत ४८. सेमरिया ४९. सोनबानी ५०. सोहराचार्य ५१. हरहनियां।

२. उपमन्यु (पाठक)

ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ। वशिष्ठ के पुत्र महाराज पृथु हुये। पृथु की कन्या से भद्र तथा भद्र से वसु हुए। वसु के उपमन्यु हुये। उनके वंश में उत्पन्न गौत्र इस प्रकार से हैं।

१ अरोदिया २ इन्द्राणियां ३. उजोर पुरिया ४. एनेवार ५. कटरवाया ६ कटकरिया ७. कटारिया ८ कनारिये ९. कमेरिया १०. कम्यु ११. कपूरी १२. करसल १३. करह्योतिया-करोड़िये १५. काकर १६. कानडिया १७ कंघारी १८. गाले गोले १९. नियोगो २०. निसार २१. नूसटीवाल २२. पडरिहा २३. पट-वर्धन २४. पटोदिया २५. पाछादया २६ पाखरोट २७. पादरवाल २८ पालेवा २९ पौरिया ३०. बकाया ३१. बहडाल ३२. वादेवा ३३. विडाल्यावार ३४. विधौरा ३५. विचमरिया ३६. वैरवनिया ३७. बराना ३८. वोरलिया ३९. मकरौदा ४०. मचकी ४१. माथेवडा ४२ मिरासिया ४३. मेषायण ४४. राडे ४५. राज-पुरोहित ४६. लटोनियां ४७. लवाना ४८. सामडीवाल ४९. सामलीवाल ५०. सामलौदिया ५१. संकरसानी

३. वशिष्ठ [मिश्र]

वशिष्ठ ब्रह्मा के पुत्र थे। उनके सात पुत्र हुए। उनके वंश में उत्पन्न मैथिलों के गोत्र इस प्रकार से हैं।

१. खरखौलिया २. खरोडिया ३. खालरिया ४. खरनालिया ५ छडेल्या ६ जलरिये ७. जाडीवाल ८ जीपडिया ९. टकसाली १०. डडेन ११ डडोदिया १२. डसारिया १३. डागवाल १४. डोडीना १५. दगैया देवगयां १६. नकुल १७. नमोदर १८. नीमचीवाल १९ नूसेरा २०. बाणदा २१. बाजोन २२. विवाल २३. विवोलकर २४. मथुरिया २५. महोलियाबार २६. माडिया माडिया २७. माहरीवाल २८. ररीवार रविवार २९. राजपुरिया ३०. रोंगा ३१. रोशभान ३२. सनाढ्य ३३. सिडोरियालेडरवाल ३४. सिंहपुरिया ३५. सीसोदिया ३६ सुतरक ३७. सुल्तानपुरिया

३८. सुमानियां ३९. सेनर ४०. शोभराज ४१ हरियाने
४२. हीशल हीशवा

४. कश्यप (तिवारी)

ब्रह्मा के पुत्र मरीच। मरीच के पुत्र कश्यप। कश्यप के पुत्र वत्सर और वत्सर के दो पुत्र हम्य और से ध्रुव हुए। उनके वश में उत्पन्न मैथिल के गोत्र इस प्रकार है :

१. कश्यप २. कुचिहा ३. खजूरवाल ४. खराम ५. खरेटया ६. खोवार ७. गढभीतर ८. गढबाहर ९. गधौटिया १०. गवडे ११. गोंगेरिया १२. गोरिया १३. गंगवाल १४. गगोतिया १५. घिनोचिया १६. चानी १७. चेचाण चेचाया १८ जायवाल १९. डिडोना २०. डेला २१. ढवका २२. ढरैया २३. ढेरवाल २४ ढेरानारी २५. ढोरल २६. दराणे २७. धामाधामू २८. पखवार २९. पचसुलिया ३०. पनसरिया ३१. पमारपरमार ३२. परमेहरा ३३. पिपरिया ३४. बदरका ३५. बदहरिया ३६. रैपुरिया ३७ लटुआ ३८. लूडीवाल ३९. वन्डेला ४०. वरजडिया ४१. वरानियां ४२. व्यास

५. मौदगल्य-चौधरी

ब्रह्मा के पुत्र अंगिरा। अंगिरा के पुत्र वृहस्पति हुये। वृहस्पति के वंश में मुदगल तथा मुदगल के पुत्र मौदगल्य कहाये इनके वंश में उत्पन्न गोत्र इस प्रकार हैं।

१ ओजवाल २. काडिया ३. कापुरिया ४. खारयास्यार ५. ग्वाला ६. चचोनियां ७. चरोणियां ८. जैतवारजैनवार ९ जपाल १०. जोजिया ११. जौनपाल १२. ज्योसी १३. डीढवाल १४. तालचिडी १५. दीर्घघोष १६. देहमणियाँ १७. धीमान-धिमानियां १८. धेराणधोमण १९. नीमचारिहा २०. पावार २१ पालडा २२. पाजणियांपालदिया २३. बमेलवाल २४. बाल-खण्डो २५. वोरा २६. वोरिया २७. रनमोटांक २८. राजतनो २९. राजोल्या ३०. राजोरिया

६. जातुकर्ण (दुबे)

ब्रह्मा के पुत्र अत्रि। अत्रि के पुत्र भगवान कृष्णात्रय पुनर्वसुमहर्षि हुये उनके शिष्य जातुकर्ण हुये। इनके वंश में उत्पन्न गौत्र इस प्रकार से हैं।

१ आसटेव २. आसतवाल ३. आसवाल ४. आसपालया सुपाल ५. आसीवाल आसईवाल ६. औडेग ओढण ७. कडवाल करवाल ८. काकटेव ९. काकटाईन १०. करहोतिया ११. कसगरिया १२. कैलडिया १३. कोलिया १४. कोंणदिया १५ घनोरिहा १६. नारनौलिया १७. बन्दइया १८ बविहावरवे वरेबा १९. वरवनिया २०. विसनीवाल विसापलवार २१. बंधोलिहा २२. भिण्डवाल २३. भीषणा २४. मिथिला २५. मीशन २६. मुर-रिहा २७ मुस्नानियां २८. मैथिल २९. मंडोरिया ३०. मुरोठिया ३१. सहारनपुरिया ३२. शकडीवो ३३. सोरुढा ३४. सुवाल ३५. सुबेडी ३६. सोमपुरिया

७. शांडिल्य उपाध्याय (ओझा)

महर्षि कश्यप के पुत्र आसित हुये। आसित के पुत्र वशिष्ठ हुये शांडिल्य गौत्र में प्रधान हुये। इस वंश में उत्पन्न गोत्र इस प्रकार से हैं।

१. आडक २. कटुमारिया ३. कानाश ४. कुमीचा ५. कुरूद्ध ६. कुरूहा ७. कुसारिया ८. गराठिया ९. गुनारिहा १०. गुरेनियां ११. गोदपुरिया १२. गोदीवाल १३. घोटरवाल १४. घोसुनियां १५. घोसुला १६. घोसुरनियाँ १७. घोषदिया १८. चदेवा चन्द्रवाल १९. जाल जालवाल २०. ठाठवनियां २१. ठाठ बोलिया २२. ठाठवाडिया २३. ढिंगरोलिया २४. तलवडिया २५. तलेलिया २६. दण्डवाल २७. धांगरौलिया २८. धोलपुरिया २९. धौलिया ३०. वडवाल ३१. बाद्रालिया ३२. बाडेवाल्या ३३. वैरवाल वैरोवाल ३४. बोदवाल ३५. रेल्थरेतालिया ३६. रेचकवाल ३७. रोसलिया ३८. रोहटवाल ३९. रंगवाल ४०. लाखनवाल ४१. लांजपाणियां ४२. लामसूदिया ४३. लालटा

८. कोडिंय उपाध्याय (ओझा)

ब्रह्मा के पुत्र मरीच। मरीच के कश्यप। कश्यप के मित्रा वरुण तथा उनके वशिष्ठ हुये। वशिष्ठ के कोडिन्य। कोडिन्य के वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

१. अकोरही २. अखोयाअखोरी ३. अचारिया ४. उज्जेनवाल उज्जैनियां ५. ककराडिया ६. कपूरवालकपूरिया ७. कलैयाकरैया ८. करोडा ९. कहवाल १०. कादन्या ११. कालोनियां करोलिया

१२. लालनियां १३. कुडरिहा १४. खपरेवाल १५. चकइया १६. चपरहा १७. चम्पारन १८. चन्दनपुरी १९. चाकोफुल्लार २०. यनसेडा २१. थुवडा २२. दलमिरिया २३. दरियाघाटी २४ धतूरा २५ धरवाल २६. बगांमार २७. वागडिया २८. वामोलिया २९. लोसर ३०. बूंदण ३१. बांकपुरिया ३२. भोलेभोलइया ३३ मखकुटी ३४. मनीठिया ३५. मडावा ३६. मोखरवाल मोखरीवाल ३७. समरेला ३८. सम्मी ३९. हटहा ४०. हाहसकोट

६. गौतम-अवस्थी

व्रह्मा के पुत्र गौतम हुये। ये न्यायशास्त्र के प्रधानाचार्य थे। इनके वश में उत्पन्न गौत्र इस प्रकार से है।

१ अगदवान २. अट्टराडिया ३. आरेवा ४. आसोया ५. उद-पुरिया ६. उत्तमपुरिया ७. कचनारा ८ कोई आरा ९. कांचवाल १०. खवडे ११. खसपडा १२. गसवर १३. गुतोरिया १४. चखरीवाल चरखिया १५. चरखीवाल १६. चिकोलवार १७. चिचैया १८. चन्देलिया १९. छतरिया २०. टाटवोलिया २१. टेहरबार २२. टोरिया २३. ठाठवार २४. ठाठोलिया २५. डडोरिया २६. डायरवार २७. ढोढरपुरिया २८. ढोकवाल २९ तमला ३०. तरोदिया ३१. नागरी ३२. नागपाल ३३. नानहरिया ३४. नाहीवाक ३५. पहारिया ३६. पासुरिया ३७. प्रमारिया ३८ बखेडिया ३९ वपुसरिया ४०. वचोरागोटवाल ४१. मामले-गारिया ४२. गुलैया ४३. मरुआ ४४. मिरच ४५. मेरानिया ४६. मोकेवाल

१०. अघमर्षण-पाठक

ब्रह्मा के पुत्र अत्रि । अत्रि कुल में विश्वामित्र हुए उनके पुत्र मधुछन्द्रा हुये। इनके अघमर्षण हुये। इनके वंश में निम्न के गौत्र पाये जाते हैं।

१. आक्षीवाल २. उमराजिया ३. ओतरीवाल ४. ओक्षमीवाल ५. कौशल कौशल्या ६. खुडानियाँ ७ खुरानियां ८. खण्डेऽवाल ९ गरवा गरुआ १०. चरसले ११. टोडरपुरिया १२ तिगन्या १३. दिज्जडे विचजडे १४. नाशल १५ नोलपुरिया १६. पारीख १७. षेच करन १८. बडकर १९. बरजनियां २०. वालोठिया २१. वरिथरी २२. विसपति २३ विसहुत २४. मिले मेले २५. मालाठिया २६. रोडेवल २७ लुहेरे २८. सकारिडवार २९ समाधिया ३०. सिलानिया ३१ सिपनामे ३२. सिमसने ३३. सीलड ३४. सैलाना ३५. सोहनपुरिया

११. बच्छस-मिश्र

ब्रह्मा के पुत्र अगिरा । अगिरा के वंश में वामदेव हुये। इसी वंश में महर्षि वच्छस हुये । इनके वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

१. आलिल आरिल २. कठवाल ३. कसवा ४ कुलविचार ५ गहनवाल ६, मोठरीवाल ७. गोडिया ८. गोदगिरिया ९. गोरटी १०. गौरागौड ११. झालेवार १२. झपटा १३. झालहा १४. झोल-महा १५. टिकोरिया १६. डगरिया १७. ताते १८ तारी १९ तमालपुरिया २० तुरतीवारी २१ नकचौरिया २२ नगारिया २३ नवारिया २४ नमाणियां २५ नरसियापुरी २६ नाथस नातूआम २७ निकुम्भ २९ नौगैयां ३० वरुली ३१ विजाडिया ३२ विजोणियां

३३ भावरोठिया ३४ भारघना ३५ मूताड़िया ३६ मोटरिया ३७ मडावरिये ३८ रेट ३९ सापण ४० सदेया ४१ सुनहा ४२ सुलेमानपुरी ४३ सुखैया हरदेनियां

१२. वामदेव-ठाकुर

अंगीरा के वंश में वामदेव हुये। इनके वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

१ अग्निहोत्री २ अठवासी अठवासिया ३ उच्छण ४ कसवरिया ५ कसाचार्य ६ कासलीवाल ७ कोमेथरिया ८ कौशलीवाल ९ जगदेश्वर १० जडवाल जडवालिया ११ जरके १२ जालोरिया १३ झटवोल्या १४ दण्डवाल १५ दलमिरिया १६ दमदयांचार्य १७ दसोडिया दसोरिया १८ द्वारिकाचार्य १९ द्वारिकावासी २० दायमसालियम २१ दुनोरिया २२ दुवारिहा २२ दवडीहा २३ दवडीहा २४ देवकुली २५ देहमाण २६ देहकोरिया २७ नराती २८ ववेर बालववेसे २९ मछरिया ३० मठवाल ३१ रेनाडियारि-नाडिया ३२ लहरी ३३ लालदिया ३४ सवेरिया ३५ सरबर ३६ सरोआ ३७ सिकन्दरपुरी ३८ सोवनियांचार्य

१३. ऋक्ष-दीक्षित

ब्रह्मा के वंश में महर्षि ऋक्ष हुये। इस वंश में उत्पन्न मैथिलों के गौत्र इस प्रकार से हैं।

१ अथवा २ अरूद्धवाल ३. असदिया ४ कोल घनी ५ कौतुकथलप ६ खजावर ७ खजूरे ८ खजूरिया ९ खाराना १० चौधान ११ जालचूनियां १२ टिडा १३ टोडीवाला १४ टोवासा १५ डेढखुरिया १६ डोंगनियां १७ ढोंगरवाल १८ ढागवाल १९ दन्देवा

२० दहालिया २१ नसवाल २२ नन्दरोली २३ नलोरा २४ बजानियां २५ वनमेदिया २६ मम्बोलिया ववारिया २७ बहेलिया २८ बालधानी २९ मलावो ३० मालवाल ३१ रामजावाल ३२ रीछड ३३ रोछावत ३४ रीमेल्या ३५ रीघडबाल ३६ रोमलो ३७ श्रावण साबन ३८ सवोलिया ३९ समथल्या ४० सीघड ४१ हरसोला ४२ हाडोतिया ४३ हिमवाल ४४ हिमहार

१४. लौगांक्षि-मिश्र

ब्रह्मा के वश में महर्षि लौगांक्षि हुए। इनके वंश में उत्पन्न गौत्र इस प्रकार से हैं।

1-ओछतबाल 2- ओदमार 3- कचूरिया 4- कमगेरिया 5- कमालपुरिया 6- किजा 7- खोखरिया खेखलिया 8- खोखी 9-खोहरिया 10- खवालिया 11- गयाबाल 12- गोस्वामी 13- चरखिया 14- चवला चपला 15- धीमान 16- धीर 17- धन्धारियां 18- धन्धरीवाल 19 -प्रनालिया 20- फरा 21- फरिहा 22- फरीदपुरिया 23- बझोडिया 24- वटामिरिया 25- बडवारिया 26- बरावास 27- वासोदिया 28- बटवाडियां 29- मेगाणियां 30- मामोरिया 31- मोडीवाल 32- लड्या 33- लधौरा 34-सीकरन्या

१५. वत्स्य-ठाकुर

ब्रह्मा के वंश में वत्स हुये। इनके वंश में उत्पन्न मैथिलों के गौत्र इस प्रकार से हैं।

1-अटल 2-अडावन 3-अडाववाल 4-आतली 5-अर्षवाल 6-अक्षप 7-इन्दौरया 8-करियरे 9-करोठिया 10-कलगीवार 11-करीचच 12-कक्करीवाल ककरउआ 13-काले 14-किस्तवार 15-कदावरिया कुटवार 16- कुटालिया 17- कुमवार 18- केशवाया

19-कोटनपुरिया 20-गुरावा 21-गुवाल्या 20-गेथुना 23-गेंदवाल 24- गोवरीवाल 25- घुमेरिहा 26- चपलवाल 27- छिडोरिहा 28- छिरा 29-जगछोरिया 30- गगोनियाँ 31- जावदी 32- झल झल्या 33- झगजडा 34- झिलोइया 35- झालूदिया 36- दुगसर 37-दुहले 38-वीलवार 39-सीपर

१६. गविष्टर-दीक्षित

ब्रह्मा के पुत्र वत्स हुये। उनके वंश में गविस्टर, इनके वंश में उत्पन्न गौत्र इस प्रकार से हैं।

1-अठवोलिया 2-अनटोला 3-अवोंल 4-अमीवाल 5-आगोलिया 6- आलोदिया 7- आपटे 8- आसत्स्व 9-आसु 10- उधाना 11- उधारने 12- उभोरा 13- ओमवाल 14- ककरोतिया 15-कन्डोलिया 16-कटुवारिया 17- कठबाडिया 18- गुजरातिया 19-गोदवाल 20-चेचेवाल 21-चोपाल 22-जासवाल 23-जैसवाल 24-जहारिया 25-टीकापत 26-टीठना 27-द्रमण 28-दंडोतिया 29-दीरोल्या 30-दीसरबड़ा 31-देवसर 32-देवज्ञ 33-धन्धेरुआ 34- नागवाल 35- विब्रूरद 36- वेलवाल 37-वेराल्या 38-भार्गव 39- भाववेल 40- भागीरथी 41- म्याजणियाँ 42- भुवाल 43- मगडाल 44- मगनेरिया 45- याकड माकड 46- मणिया 47- माहणवाल 48- रोसाया

१७. विद-मिश्र

ब्रह्मा के पुत्र भृगु हुये। इनके वंश में विद नाम के ऋषि हुये इस वंश में उत्पन्न मैथिलों के गोत्र हर प्रकार से हैं।

1. अगैया 2. अजैपालिया 3. अजौदिया 4. अटमरिया 5. अमीर 6. अहवासी 7. आज्जी 8. कादेया 9. कीलक 10. कुचेरिहा 11. कुमाविन 12. कुसेडिहा 13. टोडीवार 14. दनीवाल 15. दसहरा 16. दालानियां 17. धम्मीवाल

18. नाथनवाल 19. पारनियां 20. वेनीवार वेनैवार 21. वाड 22. भद्राणियां 23. माहुर 24. सिलावर 25. सालवाल 26. सुराणियां सारोणिया 27. सुरानिया 28. सूदरिया 29. सेदीबाल 30. सोसनियां

१८. दीर्घतमा-उपाध्याय

ब्रह्मा के पुत्र अंगीरा हुये । अंगिरा के उदत्थ तथा उनके दीर्घतमा हुये । जिनके वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं ।

1. अमेरा 2. अमेरिया 3. उराधिया 4. उमरैया 5. ओझा 6. ककडावा 7. कवडीवा 8. कडलवा 9. कटोरीव ल 10. कठरी-वाल 11. कमाडिया 12. कलावरिया 13. कदम 14. कराइव 15. कूवाल 16. कामाल्या 17. जोरोव ल 18. दलालया 19. फतहवार 20. मलगये 21. महलवार 22. मोपोटी 23. रूढ़िया रूढ़वाल 24. रूदैया रूदीवाल 25. रेवाल 26. लाडा 27. लोदरिया 28. लोहनियां 29. लोहानी

१९. गालव पाठक

महात्मा गालव के वंश में निम्न गोत्र पाये जाते हैं ।

1. आसतोल 2. करवाल 3. केशदिया 4. केशरवाल 5. खुनामा 6. गुणढरिया 7. गुधानियां 8. गोंतेरिया 9. गोहरिया 10. चामिलवकसरिया 11. चारक 12. चालीसा 13. चोरसिलहरिया 14. तलोढ 15. तिपटी 16. तौलोवाडिया 17. देहलीवार 18. धमकोर 19. धरेणवाल 20. धरोठिया 21. घिसापति 22. धरसोनियां 23. नेनवार नेनबारी 24. नवपारा नवपारी 25. पचौरिया 26. परिपांडे 27 परिसरे 28. बितहोनिया 29 बिल्हेनियां 30 भगईथा 31. भदारिया 32 भारोटी 33 भोमालिनी 34. मजीठिया 35. महलवार 36. मोवडा

37. रुद्रक्षी 38. रोशदिया 39. सरदलवाल 40. शिविथ 41 श्रीगौड

२०. कौशिक तिवारी

ब्रह्मा के अंगिरा हुये। अंगिरा के अंगीरस तथा आगे कौशिक हुये। इस वंश के गौत्र इस प्रकार से हैं।

1 कुचेनिया 2. कुलोण 3. कुहेरिया 4 खईवाल 5. खजवाडिया 6 खजवानियां 7 खिडरिया 8. खुनात्तर 9 खोवाल 10. गुनराहो 11. गोदनपुरिया 12. गोदवास 13. गोबल्या 14. गौड व्यास 15 गगारिया 16 घिसवार 17 चावन 18 चोपलडे 19. जधाशिया 20. जताल 21. जोनलीवाल 22. जोठोवाल 23. जोलणियां 24 जोवीत 25 जोषणियां 26. झाडिया 27. टेमनिया 28 दुलारिया 29. नरोडिया 30. नागोदिया 31. निधोलियां 32. नुकवीवार 33. मकरिया 34. रोशनिया 35. लखमन 36. लाघडीवाल 37. लाडीवाल 38 लोवानियां 39. समदिया 40. सामनियां 41. सेजवाल 42 सेहजवाल 43 सेठवाव 44. सोजतवाल

२१. अंगिरा-पांडे

ब्रह्मा के वंश में अंगिरा हुये। उनके वंश में उत्पन्न गौत्र इस प्रकार से हैं।

1. आख्या 2. अरोठिया 3. आढोरिहा 4. घूघरिया 5. छालवेत 6 छालवेच 7. ढेलवाल 8. वेजलिया 9. तेहनपुरिया 10. दीगणियां 11. दगाडियां 12. दोदान 13. बचनवार 14. छडोरे 15. बघोरे 16. वडोनिया 17. वनवसे 18 बडहोरे 19. बिनआई 20 विनपल्ली 21. बुद्धवारे 22 वेडीबेडियां 23. मेला वरआने 24. मेलानियां 25. मेहता 26. मोरीवाल 27. सायवाण 28. सिलावडिया 29. हरसिया 30. हरसोला हरसिया 31. हमरोठिया 32 टीसल 33. हुलास

२२. पाराशर–पांडे

पाराशर ऋषि कुल में निम्न गोत्र पाये जाते हैं।

1. डिगोदिया 2. डिगोतिया 3. डोडवाणियां 4. तडलेकर 5. त्रिफला 6. दण्द्रवाल 7. धमानियां 8. भगारिथ 9 नरउआ 10. नरवरिया 11. नारूनियां 12. नूरपुरा 13. नूरावनियां 14. नाहवे 15. पनीरिया 16. पनसरियां 17. पलवल 18. पहारियां 19. परासियां 20. पाकराचार्य 21. पिछवाडे 22. पिलावन 23. पिलदार 24. पिडवाल्या 25. पुस्करणी 26. बडोनियां वरोनियां 27. बडारलिया 28. बदरका 29. बरसोडी 30. बमसेडिया 31. बागतैरिया 32. बुचाल 33. भदरेचा 34. लवानियां 35. लहेटीवाल 36. लोखरा 37. लोटालदूरा 38. हनूवाणा 39. हरगोटा

२३. गौड–मिश्र

गौड वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. गब्बी 2. गदोरे 3 गरुड 4. गरोल्या 5. गुडरिया 6. गुरदवाल 7. गूरददिया 8. जखवार 9. जसरेलो 10. जमुनियां 11. ज्वालामुखी टांक 12. जुगेले 13. झालारिया 14. झौलनियां 15. टोडावार टोडरवाल 16. दोईवाल डण्डीवाल 17. दसाने 18. दिहोलिया 19. देहलवार देहरवार 20. धामण 21. धिनाण 22. धुन्धवा 23. धुमाणिया 24. निगन्या 25. निर्मल 96. निपाते 27. पडवास 28. पार्थक 29. बडहोतिया 30. वलआडे 31. व्यापारिया 32. विशेवार

२४. चित्रकेतु–दुबे

चित्रकेतु ऋषि के वंश में निम्न गोत्र पाये जाते हैं।

1. अतरोलिया 2. आलनोदिया 3. आलमपुरिया 4. आयनपुरिया 5. एगसार एंगसासरे 6. औरंगपुरिया 7. खेतलिला

8. खेतवाल 9. खोखल्या 10. खोरखोटी 11. गुवरेले 12 गोपिया 13. घरवाणिया 14. जढावा 15. झमरिया 16. तामनीवाल 17. तामरिया 18. तोतरवाडिया 19. तीनातवाडी 20 तोवला 21. तोमनीवाल 22. दोवसार 23. धनेवा 24. नन्दवइया 25. नानंदा 26. नूराणियां 27. नोलखा 28. नोपत्रीवाल 29. षटोदिया 30. पीवणिया 31. बकरेचा नराणियां 32. बिछानियाँ 33 बुरडक 34. बेहटवार 35. मराठे 36. मिसुरिहा

२५. समंचि (तिवारी)

महर्षि समंचि के वंश में निम्न गोत्र पाये जाते हैं।

1 अधनी 2. अगरिहा 3. अमेध्या 4. अहेरिया 5. करोलिया 6. कलहन 7. खटबास 8 खुटा 9. घाटीवाल 10 घोसिया 11 चिचोलिया 12. चिन्नोडिया 13. जुझोतिया 14. जतपुरिया 15. थनडोहा 16. थाही 17. नमोरा 18. नगावाण 19. नागर 20 फलोदिया 21. फिलुरिहा 22. वकसरिया 23. बनरसिया 24. वंदेवा 25. मालौठिया 26. महालिया 27. मुजवननियां 28 मुदगल 29. राओटे 30. राढाढे 31. रेतवाल 32. सिकरोदिया 33 सिल्लीवाल 34. सिहाबडा 35. हालोनियाँ 36. हरडारिहा 37. हसरावत 38. हसेला 39. हर्षमान 40. क्षारोलिया

२६. शोनक-दीक्षित

महर्षि शोनिक भृग वंश में हुये। उनके वंश में निम्न गोत्र पाये जाते हैं।

1. अलवार 2. अनजिये 3. अकुरवाल 4. उठोलिया 5. उपोडरपुरिया 6. अंतरे अंतवाल 7. कटइआ 8. कनोठिया 9. कनहज 10. कपिल 11. काकोलिया 12. लापडा 13. कुसुमीवाल 14. कोढाला 15. खुसरोहिया 16. ढमहिरिया 17. डाडल 18. डागर 19. ऋडा गलिया 20. नन्दपुरिया 21. नारोलिया

22. नैनागारिया 23. बछोडिया 24. भनोरा 25. भरगठा 26. मोडीवाल 27. मोरवाल 28. मकुनाया 29. साडे 30 शिखनाल 31 सेदवाल

२७. सावर्ण्य (मिश्र)

महात्मा सावर्ण्य के वंश में निम्न गोत्र पाये जाते हैं।

1. ईनाया 2. उच्चेचाय 3. उधानियां 4 ककहरे के टांक 5. कचनौआ 6 कचोरिया 7. कदहरिया 8. करोत्रा 9 कसहेरे 10. कसेनया 11 कस्तूरिया 12 काकरडोर कारी 13 किटोनियां 14. कीथौलिया 15. कुढोलिया 16 कुलीबार 17 कोरिया 18. गाजबा 19 मुस्वार 20 गोतनियां 21. गोबिल 22. छतहा 23 छमारिहा 24 छिन्दोरिया 25. झानोल्या 26. झाडेलिया 27. झोडहा 28 डडेरवाल 29. ढढोरिया 30. ढोगना 31. तिबत 32 तिबारी 33 त्रिपुरिया 34 नागपुरिया 35 निरबनियां 36. फलक 37 फरवइया 38 बन्दबाल 39 बन्दीघोर 40. बुत्रबासिया 41 बुचिया बुचारिया 42 बरीआर 43. भाकरचा 44 भादबाल भडबाल 45. मउइया 46. मरछिया 47. मादनवालिया 48 शेनकबाल

२८. कात्यापन-पांडे

महर्षि कात्यायान के वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1 इकजोरिया 2 इकनौरिया 3. इचोनियां 4. इटिहा 5. कजरीवार 6. कनपुरिया 7 करथनियां 8. कमरबार 9 कुलजिया 10. कुसुमवरिया 11 कैमनिया 12. कैमारगरिया 13. कोलनियां 14. कंधारी 15. कधारिया 16 खीग्राम 17 चकसनी 18 चौबीसा 19 छाडवाल 20 जरबातरे 21. जनोला 22. जबडहें 23. जामान 24 जरादी 25 जोनस 26. जोड 27. तलाथू 28 तराना 29. लेराज 30 थामनिया 31. थापडे 32. थावडिया 33. देशरथ 34. धडारिहा 35. धनडा 36. निषधिया 37. नेमिषहा

38. रुलया रुलवाल 39. रुआवालिया 40. रेठनियां 42. रेनुका 42. रोवाडियां 43. सपर्णी 44. सम्मलवार

२६. गार्ग्य-वाजपेयी

यह अंगिरस कुल के ऋषि हैं। कैकेय देश के राजा के पुरोहित थे। इनके वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. अकुर 2 अरोचिया 3. अतोदिया 4. अवैया 5. आटेवार 6 आरतीबार 7. ककेजवाल 8. कढोतिया 9. कुटवाल 10. कुदाल 11 कुमरिये 12. कुरचैनियां 13. खेमपुरिया 14. गोलिहा 15. गोरखपुरी 16. गोषकपुरी 17. घार 18. चडइया 19. जमरोहिया 20. जमरैया 21. जसयावार 22. जिरोनियां 23. टिलिनाम 24. टाकमतुरी 25. टीकाबोरी 26. टुन्टुक 27. डाडयारा 28. ढढरिया 29. ढेहनो ढेहना 30. ढडारढरी 31. ढेढना 32. नीमोणियां 33. पिडवा 34. पतिया 35. पिचांरिया 36. परटबाल 37. बनवारया 38. बरनेला 39. बालगोला 40. बिनोरा 41. सामनोड 42. सारडा 43. सीरोठिया 44. हरानोबाल 45. मवार

३०. वैयाघ्रुवदिया-त्रिवेदी

महात्मा वैयाघ्रुपदिया के वंश में निम्न गौत्र पाये जाते है।

1. अग्रहर अदया 2. अरोठिया 3. अरोहियावार 4. कडरियेपड 5. कटबाल 6. कसमाडे कोदइया 8. खोआडे 9. गंगास्वार 10. चुपडे 11. जाखीना 12. जाणदा 13. टिहोलिया 14. डायना 15. तपनपुरिया 16. तिवाणियां 17. तिलौदिया 18. त्रिवेदी 19. तूतोदिया 20. तोडापुरिया 21. देबाल देबलिया 22. देहमीवाल 23. दोहाबाल 24. लदूनियां 25. लुथरा 26. लोपडा लोवडा 27. सनोरा 28. सरयूपारी 29. सरचोरा 30. खूनवाक 31. सूरलिया

३१. गर्गीय-पांडे

महर्षि गर्गीय के वंश में निम्न गोत्र पाये जाते हैं।
1. कजावर 2. काटर 3. कोणया 4. कोराण 5. गोवर्धन धरिया 6. चेबरिया 7. चोइवाल 8. छतबने 9. छाटव 10. छोपरोहिया 11. छोरपुरिया 12. जखोदिया 13. जजुआडे 14. जनुगमे 15. जनक 16. जसैयावार 17. डरजुहे 18. डरगरयारे 19. ढढी-वार 20. ढूमान 21. ढहेल 22. तावलेकर 23. तिगडडा 24. तिमनियां 25. त्यागो 26. त्रिपटे त्रिपाठी 27. तुरुचा 28. दिसारिया 29. दोंदेरिया 30. पेडवाल 31. पोबरवाल 32. बइडा 33. वेदीवाल 34. भटेरे 35. भडया 36, भडगोल 37. हरनियां 38. हरयानियां

३२. यमदग्नि-मिश्र

महर्षि यमदग्नि के वंश में उत्पन्न निम्न गौत्र पाये जाते हैं।
1. लकराया 2 कनबजिया 3. कुसकुरिया 4. खोरिया 5. गिरा बड़ियां 6. गुधायवर 7. घटबरिया 8. घटसंधा घटबूंदा 9. घट बासिया 10. चुड़ोड 11. चोलानियां 12. छानाल 13. छालवाल 14. जाइबाल 15. झुलानियां 16. झूमावाल 17- दरिहरे 18- दहिवारे 19- दिखवे 20- दोकिन्तवार 21- नमवाल 22- नीमोनो 23- बेहरिक 24. बेहगिणिया 25- भगोरिहा 26. भटेले 27- रोडा रोडिया 28- रोडरिया 29- रोरिया टोडी 30- लदानियां 31- लाखा 32- सोसालिया

३३- गर्ग-चौबे

यह एक भारद्वाज अंगिरस कुल के प्रख्यात ऋषि थे ये कुल पुरोहित भी थे। इनके वश में उत्पन्न गोत्र इस प्रकार से हैं।
1- अघोत्रे 2- अमाजो 3- उनाजिया 4- कहबनिया करुगरिया

5. करछनियां 6. कमतारपुरिया 7. कमानदिया 8. कैलारिया 9. गरसैया 10. घासोबार 11 चौसहा 12 छपरियावार 13 जालोठिया 14. जारोलिया 15. जोवलिया 16. ढोगरोठिया 17. दीघरोठिया 18. देबाणियां 19. धनेलिया 20. धाम धमिया 21. धनुस्कर 22. धराणियां 23 धराठे 24. धूरिया 25. नगोरे 26. नरहरिया 27. निरपाम 28. नैनबार 29. पीलबाई 30. वहनगुरिया 31. भारद्वाज 32 भागवती 33. मुराक्ष 34. भूराणियां 35 मथवान 36. यजुर्वेदी 37. यशभाग 38. लेनगुरिया 39. सरवाडा 40. सवालखो 41, सीगण 42. सोलसी 43. हलवाल हरवालिया

३४. कपिल—दीक्षित

महात्मा कपिल के वंश में निम्न गोत्र पाये जाते हैं।

1. गधोना 2. गोदना 3. घेइया 4. घोषआने 5. घनघोरिया 6. चन्द्रवाल 7. चागू 8. चिचखा 9. चैनपुरिया 10. छोछोलिया 11. जोगणियां 12. जोपटवाल 13. डेढरावत 14. तरनवाल 15. तरुनाला 16. दिल्लीवारटांक 17- धरेवाल 18- धुरटांक 19- धोवण 20- धोवेलिया 21-ननारे 22-नानवाल 23- पनचोमे 24. पबया 25- पवियां 26. परचेडिया 27- पपोसी 28- पिपरोतिया 29- पिपरोहिया 30- पांडोलिया 31- बटपालिया 32- बलदुआ बड्डुआ 33- बाबरिया 34- विलायती 35- बीवर वाबर 36- बृजेरा 37- ब्रह्माखत्री 38- हरोलिया

३५. गौतम—पांडे

अंगीरस कुल में प्रसिद्ध ऋषि थे। इनके वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. अटोधिया 2. अटागरे 3. उचाडिया 4. उदोलिया 5. उनैग्राम 6. उरबल 7. उनसैनां 8. करिहरे 9. कनिगमे

10. करेठिया 11. कालदिया ककोदिया 12. कुटरोलिया 13. कुटर 14. कुम्हरिया 15. कुमथर 16. कुलझपहा 17. कूकपाल 18. कोततिया 19. छवड़ा 20. छाँडिया 21. छिकवाडियां 22. धुकावर 23. जावलेवार 24. जोयवाल 25. जूनारिया 26. तीरानतीरानियां 27.थडीवाल 28. दादरेचा 29. दानोरिया 30. दाहडे 31. दुवधनिया 32. विहढेरे 33. विप्र 34 वीमोत्तर 35. वैरआन 36. वेसआर 37. मनहरिया 38. मन्नतपुरी 39. महोलिया 40. मानकपुरी 41. मामखोरिहा 42. संखवास 43. सारोलिया 44. सामडीगोटवाल 45. सगवाल

३८. बत्स–पाठक

ब्रह्मा के पुत्र वत्स हुये। इनके वंश में निम्न गोत्र पाये जाते हैं।

1. आसल्या 2. उमरविसायती 3. उमरावत 4. उरसरा 5. औसदी 6. ओसतवाल 7.कमोथिया 8. कुककरीवाल 9. कुचावला 10 केशवानियां 11. कोखतलर 12. बाचनिया 13. बोरबाणीकर 14. मावरपाल 15. मामदौडा 16. भुमाहारी 17. भुमिहा 18 भूमेध्या 19. महनवाल 20 मैनपुरिया 21. मालगेरिया 22. मांगडोलिया 23. रायपुरविया 24. रौलीवाल 25 लहोरिया लहारिया 26. लोहरिया 27. लोदइया 28. सबधेइया 29. सरसोलिया 30 सिलबाडिबघेइया 31 सिमरघेइया 32.सीन्दल 33.सुइल 34. सूचालिया 35. सोमध्या 36. सोवडी 37. सोहनीवार

३९. भारद्वाज—उपाध्याय

महर्षि भारद्वाज के वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. अम्बुरीवार 2. अलुरावाल 3. अढोचिया 4 अढोनिया 5. आमपुरिया 6.उचितवार 7.उवाने 8. उतारिया 9 उदपुरिया 10. उपरदहा 11. ऊडीवार 12. एकहरिये 13. कवीसवाल

14. करेली 15. काकरिया 16. कारलेवार 17. चौबे 18 चौरच 19. झिठावा 20. भोजरा 21. भरिजन 22. झिया 23. टुकवार 24. टांक 25. नागर 26. नानपुरिया 27 नामर्दवाल 28. नामुर्दा 29. नग्रणी 30 पडरिहा 31. पांडोलिया 32. पीमाडिया 33. वाचनिकेत 34. वार्ष 35. वाचनिकेत 36. वार्णेय 37. बुटर 38. बोवावार 39. भगउतिया 40. भूरेमेरन 41. भोरहापरता 42. मकरिया 43. मालवाडिया 44. मिरहामीरा 45. सक्रगाम 46. सोरदुतिया 47. खोहापुरी

३८. कात्यायन-शुक्ल

महर्षि कात्यायन के वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1 गोरेवाल 2. चकोलिया 3. चिचरवा 4. चूलीवाल 5. छमान्या 6 जालवाल जाग्रलवाल 7. झाडिल्या 8. झामडोला 9 टंकीवाल 10. डावरबादिया 11. जाग्रीवाल 12. डिगुलिया 13. डिडील्या 14. डिल्यारा 15. डेरोलिया 16. षडवाल परवाल 17. पटलवाल 18 पहलवानपुरी 19. षथमेसुरिया 20. षापदवाल 21. पुलयकरिया 22. पुवाल 23. पैरीवाल 24. पंचोला 25 बदले 26. विनायक 27. विधाता 28. विसाक 29. बुनोलियावार 30. बांदेला 31. मांगरोलिया 32 लिधौरिहा 33. लेनवार 34. सावरवाल 35. शाल्थ 36. सागठवाल 37. सप्तऋषि 38. सीवाणियां 39. सीटक 40. सोक्ष्मीवाल 41. सुईवाल 42. सूदनवाल 43 सूनालिया 44. सेवाल 45. सोंजनिया

३९. वशिष्ठ-पुरोहित

महर्षि वशिष्ठ के वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. आरवन्या 2. कतरिये 3. कवरेचा 4. खरवाफिरजोर 5. खेनेकर खलकर 6. खेमडिया 7. मुटर 8. गुगालिया ९. गुना-डिया 10. गोडहुल्या 11. थमनोत्तर 12. थमनेचे 13 थमेरिया 14. थोरटवाल 15. दुधोलिया 16. बाऊल 17. बासबासड

18. बुद्धालिया 19. मडिया 20 मोनया 21. मोनेरिया 22 योगोकर 23. रिछवाल 24. रिझोरिया 25. रोदइया 26. जूरेल्या 27. बागटेनियां 28. बिनालिया 29. विपतगान 30. समशावादी 31.सहारनसारन 32. सिजोरिया 33.सिझोनियां 34. सोहीसीरुठी 35. हुलसवीरहुली

४०. कश्यप-ओझा

महर्षि कश्यप के वंश में निम्न गोत्र पाये जाते हैं।

1. अवस्थी 2 अगन्या 3. अगनअरडीवाल 4. ईवारी 5 ईसाडिया 6. आका 7. ओढिया 8. ओमीताव 9. आम्बरी 10. कढसरिया 11. कसाबडिया 12. तोराणियां 13. दीगोल 14. द्विवेदी 15. नगलया 16. नारयाल्या 17. नारेडा 18. नानोतिया 19. नेरादवाल 20. बागचैनिया 21. बूंदिया बूंदीवाल 22. भुटेरावाल 23. मुलकानियां 24. भूदेवा 25. भेसोलिया 26. भोजक 27. भोजपाल 28. महमपुग्यिा 29. महोल्या 30 रनावज 31. रताबनिया रतबा 32. रमचेरा 33. लगोरिहा 34. लदोइयावार 35. शकुल 36. सनचाक 37. सरगोटा 38. मरजे सग्वें 39. स्वामी 40. सिलटांक 41. सोरखिया 42. सोरानी 43. हवानी हावली 44. हमीरपुरिया 45. होश्यारपुरिया

४१. कश्यप-दीक्षित

महर्षि कश्यप के वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. कशडोल 2. काखलीवाल 3. कुलारिया 4 कुसोवाल 5. खजरिहा 6. खटहरिया 7. खरीदहर 8. खुरेट खर्राट 9. ढना 10. ढेवलिया 11. तलानिया 12. तिगाली 13. वोढाण 14. नेसूवा 15. परसा 16. परासर्याचार्य 17. पंचपकरिया 18. वचखीवाल 19. ब्रह्मपुरिया 20. वुधार 21. बुचबुचक

22. मावडेल 23. मुडानिरे 24. राजोरा 25. रावल 26. गढोलिया 27. रुखलीवाल 28. रुपइयाबार 29. रोरिया रोनया 30. रोजवाल 31. सरियावार सोलावार 32. सिरदान्या सीवाल 33. सकान्या 34. सहीटांक 35.सेवाल ठाढालिया 36. सियानियां टांक 37. सूजा 38. सैनपुरी 39. सोढवाल

४२. पाराशर-पाठक

महर्षि पाराशर के वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. खवालिया 2. खेमग्यिा 3 खोतातालिया 4. गुबलाना 5. गुरुवाला 6. गुहाणिया 7. गोमिद 8. गोरसपुरिया 9. घाटवाल 10. घूमरघूमा 11. चवललोल 12. चन्डला 13. चमोल 14. चौदस 15. चोरसिया चोलख 16. झलानियां 17. झोलरिया 18. टाडे 19. टाडवाल 20. ठाकुरिया 21. ढालोलिया 22. ढिकवाल 23. ढिरोवाल 24. तारोलिया 25. थकरा 96. थामिकवाल 27. थापक 28. दवालिया दुवालिया 29. दसदनी 30. दीक्षित 31. वालदिया 32. वालोरिया 33. बड्वादिया 34. विजपुरिया 35. बीजन्या 36. बैजुआवार 37. महावर महीवर 38. मेहदवार 39.मोहनियां 40.सालसम्य 41.सांगोलिया 42. सुईचीनी 43. सूडालिया 44. सामलोटिया 45. सेहदवाल 46. श्रीमाली 47. हिनोचिया 48- टिकारीवाल

४३. भारद्वाज-मिश्र

इस वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. अजमेरा 2. एगानियां 3. एडबान 4. ककोनदिया 5. कनोदा 6. कणियां 7. कंचनगेहिया 8 चितइनियां 9. चिनियां 10. चिरउनियां 11. टार 12. डढेरिया 13. डेढवाल 14 ढाचवाल 15 ढालना 16. ढिकसरा 17. तगाला 18. नखनी 19. नग्रली 20. नादया 21. नागल 22. नेनजीरा 23. नैपालपुरिया 24. बुसूआडे 25. वीजोरिहार 26. भगाचिता

27. भाजोरिहा 28. भोखरिया 29. भोताली 30 माडिया 31. मिरोचिया 32. मोहनपुरिया 33 लडाइया 34. लामडोवाल 35. सनलटेत्र 36. शरमहा 37. सरुहाचार्य 38. सामडारिया 39. सखरियाचार्य 40. सराया सायेवाल 41. संगडोहा 42. दरसोनिया 43. क्षीरवार 44- सुनालपुरिया, गोलापूर्व

४४. कृष्णात्री-दीक्षित

महात्मा कृष्णात्री के वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. ककरवाल 2. ककरघेइया 3. कपातिया 4. कुलवाडिया 5 खिसल्या 6. खार्तो 7. गजारिया 8. गग्सेया 9 गीतपुरिया 10 गुनहा 11. छपरिया 12. डाक 13. डामौर 14. डोडिया 15. डोगरा 16. ढेवडिया 17 तुला 18. थरवार 19. दमरोलिया 20 दिगोडिया 21. दुलइबा 22. देवपुरिया 23. निधौलियां 24. नदिया नघिया 25 निगोनदिया 26. नुनिहा 27. नन्दनोरिया 28. पचौगे 29. पटेरिया 30. पडरिहा 31. पदहुऐ 32 बराबे वरान 33 बरारेबार 34 विमोरिहा 35. विहोरिहा 36. मखतारपुरिया 37. लपटेरे 38. लमारलामपुरिया 39. लिटोइया 40. सीधोरिहा

४५. मुदगल-पाठक

महात्मा मुदगल के वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1- अल्वरिया 2- कशमेरिया 3- काकड कडारिया 4- कासलिया 5- किनवाल 6- किंजागिरिया 7- केरलवाल 8- खरखनिया 9- खमीय 10- गरगडिया 11- ग्वारेलाल 12- गुलाणियां 13- गोपती 14- गौनमबाल 15- वनबसे 16- वपनपुरिया 17- वरमाल 18- महोरोलिया 19- महाबे 20- माचोलिया 21-माथुर 22- मारवन्डे 23- माउन 24- मोमलिया 25- राजूतया 26- रापेडिया 27- रोषरोष 28- सिखवार 29- सिलदारपुरिया 30- सिरोहिया 31- स्वात 32- हाथीवार

४६. कन्डव-झा

महर्षि कन्डव के वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1 उरही 2 उपवन 3. उरदोंरिया 4. एवानियां 5. जताइया 6 जमढेया 7. जाटसकेरिया 8 झिरोनिया 9. टनकपुरिया 10 टेडईवार 11 पकरीवास 12. पढोइया 13. पलिहा पालिया 14 पिपरउआ 15. पूरिया 16. बडगया 17. बनगैया 18.बरोध्या 19. बठुरेपार 20. बखोलिया 21. वीरोरिया 22. बूखोडिया 23. भडआरे 24. भटोरे 25. मगरारपुरिया 26. मडरिये 27. मराडारचे 28 रामागठिया 29. सजुआडे 30. सकरडार 31. सकरिया 32. सिमरना 33. सिगरिया सिधारिया 34 सिकपुरिया 35. सुपरती 36. सुरगने 37. सेनेवार 38. सेवानियां 39. सोनियां 40. सोनेवार

४७. वत्स-झा

महर्षि वत्स के वश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. झूखा 2. झुकझुनियां 3. डेडोल 4. ढरोलिया 5. दलोदनी 6. दालरा 7. दादनपुरिया 8. दाबाकर 9. देशमुख 10. देशवास 11. देहरिया 12 नगालिया 13. ननवान 14. नेवाल 15. मिपरवार 16. मडघे 17. मजालपुरिया 18 मझआडे 19. मलथैया 20. मढवाले 21. मन्हुले 22. मोहरे मोहरी 23. माहरिया 24. मिलालपुरिया 25. मिहीवाल 26 मिहारिया 27. मैंनवाल 28. यमदग्नि 29. रावत 30. रेतवाल 31. रोडीवाल 32. रोटोलिया 33. लमचेरा 34. सहरिया 35. सहीवरटांक 36. हरिपतये

४८. कात्यायन-उपाध्याय

महर्षि कात्यायन के वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. अम्याडत 2. अमरोतिया 3. असवारिया 4. ककबडा 5. कांचनिया 6. गटुक्षा 7. गवैया 8. घोडहा 9. चन्दछुरिया

10. जेवनवाल 11. झालू 12. तपत्री 13. तपोंघत 14. परीक्षत गांठिया 1 . पसवार 16. पहातिया 17. पठ्ठीवाल 18. भारतीया 19. मासवार 20- भूमावाली 21- मदकुट 22- माडवार 23- मालणियां 24- मिथिला 25- मिरहामहारन 26- मूलहरी 27- मुसवार 28- मोकरेड 29- मोटरवाल 30- यारिहया 31- लमआने 32- लाही 33- लिसेते 34- बंगालिया 35- सरवात 36- सिंगलर 37- सिरसोदिया 38- सोसेरिया 39- हरविलासिनी 40- हर्पमान 41- छूरक

४९. सुवर्णा—दीक्षित

अंगीरस कुल के कन्डब ऋषि के पुत्र थे। इनके वंश में निम्न गोत्र पाये जाते हैं।

1. अजमोदा 2. अत्ररिहा 3. अंदरखिया 4. अमोनिया 5. अत्रकुन्टी 6. अशरेखा 7. करआने 8. करमहे 9. खटबाडिया 10. खरवाडिया 11. छिपढार 12. छीपाखार 13. छेडिया 14. झास 15. टडोलिया 16. टपया 17. टोलिहा 18. डाडरवाल डावीवाल 19. डीगरा 20. तोरमहा 21. तोरवार 22. दिनारीवार 23. दिनारिया 24. पापरीवाल 25. पांचरीवाल 26. सीपरा 27 बरईवार 28. वसडोहा 29. बडावालिया 30 वारसिलर 31. महलोनियां 32 मुडरिहा 33. गामपुरिया 34- रनवाम 35-रारिया मवाथिया 36- रावलकुटी 37-रहीपहं 38- रठेरा 39- रामटिडिपा 40- रामरन्धोरिया 41- सेमो 42- रोलतिया 43- संथरबाल 44- हरहनिया 45- हरद्वारोवलोरिया

५०. कौशिक—दुबे

सावर्ण्य मन्वंतरि में से एक ऋषि है। इनके वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1- अगारी 2- अगासो 3- अमर 4- अनलिया 5- अमलाया 6- अमोदवार 7- आडलिया 8- उत्तिपाल 9- उडाचवाल

10. उपाध्याय 11. जलकी 12. जरैया 13. डींगरा 14. डोरवाल 15. ढालवाणिया 16. तहनगुरिया 17. तिलखण्डी 18. तुकहरिया 19. थोमनियां 20. नोनातीवार 21. फरनासी 22. फलबनियां 23. फरुहा 24. फकसहार 25. बघमार 26. बढहुलिया 27. वहबरी 28. बघवनियां 29. वलोरिहा 30. वघरौनियां 31. वापसेबार 32. वडवाम 33. विठोनियां 34. विलगर 35. वंशवलोजन 36. वक्ष्यवारो 37. मदावलेवार 38. मुतरेले 39. मोहरिया 40 लादनगधइया 41. लाहौरिया 42. लोईवल 43. लोवाड.रे 44. लोहरवार 45. लोधिया

५१. गार्ग—ओझा

अगिरस कुल के ऋषि थे। इनके वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. गजराज 2. गजवहोलिया 3. गरवोले 4. गरगैया घरटवाल 5. घिमरिया 6. चावथं 7. झवनिया 8. ठठता ठपहा 9. ठाडेगया 10. ठाकुरवना 11. ठाहानी 12. ठोकरवाल 13. डवडीहा 14. डेत्ररिहा 15. डेढसोनियां 16. डेढगैया 17. पटोदिया 18. पहाडिया 19. पुरविया 20. वनरिहा 21. बकेनियां 22. वसई वसमे 23. वरवोसिया 24. ववनामरद 25. बरइतिया 26. बारीववारी 27. बडोलिया 28. बापुरिया 29. विसालियावार 30. बेससहा 31. बैरियाचार्य 32. विज 33. वेलाखरिया 34. विझवनियां 35. मडगैयां 36. मडोरिहा 37. मझइया 38. मोरलिया 39. सरोठिया वार 40. हतूवा 41. हेमबीर 42. होकार 43. ववरिया

५२. गौतम झा

अगीरस कुल के ऋषि थे। इनके वंश में निम्न गौत्र पाये जाते है।

1. करवारी 2. करउना 3. कसकारी 4. कराउदिया

5- कर भानपुरिया 6. कुछमुछिया 7. खवडिया 8. छवोला 9. जवनपुरी 10. जकहार 11. जातवाले 12. जारीवती 13. जेठ-वार 14. जोनपुरी 15. घनसुइया 16. धानीवाल 17. धागडवाल 18- धांसू 19. धामपुरिया 20. धुगले 21. पारासरिया 22. वके-नियांवार 23. वासडीवहेलिया 24. विजाणिया 25. बुढन 26. वेमहार 27. मालेवार 28. मगरिहा 29. मथुरिया 30. मेहरवार 31. सलवारिया 32. सरियापुरिया 33 सारंगपुरिया 34. साहपुरिया 35. सिंगीवाल 36. सिहपाल 37. सेबानियां 38. सोसनावाल

५३. सांडिल्य—मिश्र

वशिष्ठ सांडिल्य गौत्र के प्रधान थे। इनके वंश में निम्न गौत्र पाये जाते हैं।

1. दाडीवाल 2. द्राउनियां 3. धूसरावाल 4. नदावनी 5. नसेपरा 6 नरोदिया 7. ननवाल्या 8. नगदीवाल 9. नानदा 10. पटीवांक 11. परतापुरिया 12. परसियरे 13. पनिपाल्या 14. पालीवाल 15. वरनरिया 16. बनोरिहा 17. बनपुरिया 18. बघरोलिया 19. वरोलिहा 20. वरेली के टांक 21. वरेछा के टांक 22. व डणियां 23. बीसोरिहा 24. बीजोरिहा 25. वीसा-पुरोहित 26. बूढवाल 27. बूढोलिया 28. बूंदिया 29. बोदवाल 30. यूथिल्या 31. भूरेठा 32 यूरिया 33. भोजपुरिया 34 मडोरिया मानही 35. सलूनियां 36. सालोरा 37. सीरोठिया 38. सूलनियां 39. सुलाखपुरिया 40. सेमरवाल 41. सोयणबाल 42. हरमुख



ऋषि १	पदवी २	वेद ३	प्रवर ४	शाखा ५	सूत्र ३	उपासना देव ७	देवी ८
1. भारद्वाज	शुक्ला	यजुर्वेद	3 अंगीरा वृहस्पति भारद्वाज	माध्यांदिनी	कत्यायन	गौरी नंदन	दुर्गा
2. उपमन्यु	पाठक	,,	3 भरद्वसु वशिष्ठ इन्द्रप्रमद	,,	,,	एकदंत	दुर्गा
3. वशिष्ठ	मित्र	,,	3 शक्ति पाराशर वशिष्ठ	,,	,,	ना उमाखपुचीदेवी	
4. कश्यप	तिवारी	,,	3 वत्J नेध्रुव कश्यप	,,	,,	विघ्नविनाशक देवी	
5. मोद्गल्य	चौधरी	,,	3 भारभ्य अंगिरा मोदगल्य	,,	,,	एकदन्त	महेश्वरी
6. जात्त्कर्ण	दुबे	,,	3 अत्रि वशिष्ठ जात्त्कर्ण	,,	,,	गणेश	काली
7. शांडिल्य	उपाध्याय ओझा	,,	3 असित देवल शांडिल्य	,,	,,	सिद्धेश्वर	अंबिका
8. कोडिन्य	ओझा	,,	3 मित्रवरुण वशिष्ठ कोडिन्य	,,	,,	गणपति	उमा
9. गौतम	अवस्थी	,,	3 वृहस्पति अंगिरा गौतम	,,	,,	त्रयंवक	भैरवी
10. अधमर्षण	पाठक	,,	3 विश्वामित्र मधुच्छंद्रा अधमर्षण	,,	,,	एकदन्त	काली
11. वच्छश	मिश्र	,,	3 च्यवनभृगु आप्तवान	,,	,,	अन्नदेश्वर	महेश्वरी
12. वामदेव	ठाकुर	,,	3 अंगिरा वामदेव गौतम	,,	,,	कालभैरव	महाकाली
13. ऋक्ष	दीक्षित	,,	3 अंगिरा वृहस्पति भारद्वाज	,,	,,	सदाशिव	शीतला
14. लोगांक्षी	मिश्र	,,	3 कश्यप वशिष्ठ वत्स	,,	,,	ईश्वर	ईश्वरी
15. वत्स	ठाकुर	,,	3 भार्गवच्यवन और्व	,,	,,	सदाशिव	उमा
16. गविष्टर	दीक्षित	,,	3 अत्रि अर्चनावश गविष्टर	,,	,,	सिद्धविनावल	सिद्धे

	ऋषि	पदवी	वेद		प्रवर	शाखा	सूत्र	उपासना देव	देवी
	१	२	३		४	५	६	७	८
17.	विद	मिश्र	यजुर्वेद	3	भार्गव च्यवन और्व	मध्या.	कात्या	विकटेश्वर	पातली
18.	दीर्घतमा	उपाध्याय	,,	3	उतथ्य अंगरिस दीर्घतमा	,,	,,	विनायक	गौरी
19.	गालव	पाठक	,,	3	गालब विश्वामित संसेपा	,,	,,	उग्रभैरव	भैरवी
20.	कौशिक	तिवारी	,,	3	विश्वामित्र देवरास उद्यालक	,,	,,	हरीहर	मातंगी
21.	अंगिरा	पांडे	,,	5	अंगिरस भारद्वाज वार्हस्य ब्यामाढय कुत्स		,,	विनायक	भुवनेश्वरी
22.	पाराशर	पांडे	,,	3	पाराशंर कृष्णाध्रुव वशिष्ठ	,,	,,	विनायक	उमा
23.	गौड	मिश्र	,,	5	वत्स भार्गव आपल जमदग्नि चेगत्स	,,	,,	सदाशिव	अंविका
24	चित्रकेतु	दुबे	,,	3	चित्रकेतु धनेज्या कात्यायन	,,	,,	सिद्धेश्वर	धूमावती
25.	समर्चि	तिवारी	,,	3	वशिष्ठ शक्ति पाराशंर	,,	,,	महेश्वर	अंबिका
26.	शोनल	दीक्षित	,,	3	शुक्र शोनक गार्ग	,,	,,	विनायक	भद्रकाली
27.	सावर्ण्य	मिश्र	,,	3	उपमन्यु वशिष्ठ सावर्ण्य	,,	,,	गणेश	काली
28.	कात्यायन	पांडे	,,	3	कात्यायन काम्यकल्प	,,	,,	विनायक	सिद्धेश्वरी
29.	गार्ग्य	वाजपेयी	,,	3	गार्गेय संखे गार्ग्य	,,	,,	उग्र भैरव	भैरवी
30.	वैयाध्रुपदिये	त्रिवेदी		3	वैयाध्रु पदिये	,,	,,	शिव	अंविका
31.	गार्गीय	पांडे	,,	5	गार्गेकाडिस शांडल उर्मि विष्णु	,,	,,	सिद्धेश्वर	भवानी
32	यकदग्नि	मिश्र	,,	3	यमदग्नि भृगु शुक्र	,,	,,	कालभैरव	महाकाली
33.	गर्ग	चौबे	,,	5	गर्ग गागेय उर्मि गांधर्व मिलाल	,,	,,	भैरव	भवानी
34.	कपिल	दीक्षित	,,	5	अंगिरस वृहस्पति च्यवन उपमन्यु कपिल		,,	सिद्ध गणेश	उमा
35	गौतम	पांडे	,,	3	गौतम आंगिरस औतथ्य		,,	त्रियंवक	भैरवी
36.	वत्स	पाठक	,,	5	भार्गव च्यवन आप्तवान जमदग्नि पाठक		,,	विश्वनाथ	दुर्गा
37	भारद्वाज	उपाध्याय		3	अंगिरा वृहस्पति भारद्वाज	,,	,,	सिद्धेश्वर	भवानी
38.	कात्यायन	शुक्ल	,,	3	आंगिरस भार्गेय कात्यायन		,,	शंकर	सती
39.	वशिष्ट	पुरोहित	,,	3	वशिष्ठ शक्ति पाराशर	,,	,,	महेश्वर	उमा
40	कश्यप	ओझा	,,	3	काश्यप वत्सनैध्रुव	,,	,,	रुद्रभैरव	लक्ष्मी
41	कश्यप	दीक्षित	,,	3	वत्स नैध्रुव कश्यप	,,	,,	शंकर	शीतला
42.	पाराशर	पाठक	,,	3	वशिष्ठ शक्ति पाराशर	,,	,,	विनायक	उमा
43	भारद्वाज	मिश्र	,,	3	अंगिरा वृहस्पति भारद्वाज	,,	,,	विश्वम्भर	अन्नपूर्णा
44	कृष्णात्री	दीक्षित	,,	3	उशिक विश्वामित्र देवल	,,	,,	शंकर	भवानी
45	मुद्गल	पाठक	,,	3	अंगिरा भारम्य मोद्गल	,,	,,	गजमुख	दुर्गा
46.	कण्डव	झा	,,	3	कण्डव अंगिरा वृहस्पति	,,	,,	विनाशक	शीतला
47.	वत्स	झा	,,	5	भार्गव च्यवन आप्तवान यमदग्नि और्व		,,	सदाशिव	उमा
48.	कात्यायन	उपा०	,,	3	आंगिरस गार्गेय कात्यायन	,,	,,	गनेश	गौरी
49.	सुपर्न	दीक्षित	,,	3	विश्वज्ञ परिह सुपर्ण	,,	,,	शिव	अम्बिका
50	कौशिक	दुवे	,,	3	अंगिरस देवराज औद्यालक	,,	,,	गणेश	गौरी
51.	गार्ग	ओझा	,,	5	गार्गि च्यवन आंगिरस ईर्षा वृहस्पति	,,	,,	सिद्धेश्वर	भवानी
52.	गौतम	झा	,,	3	वृहस्पति आंगिरा गौतम	,,	,,	गणेश	पारवती
53.	शांडिल्य	मिश्र	,,	3	देवल असित शांडिल्य	,,	,,	महेश	गौरी

मूल ग्राम गौत्र

राजाश्रय अथवा बिना आश्रय के मैथिलों का विस्तार देश के भीतरी भागों में होता गया उन्होंने जहाँ भी जो ग्राम (खेडा) बसाये उनके नाम पर ही मूल ग्राम गोत्र का प्रचलन चल निकला इसके साथ ही जिस वंश की सत्ती (शक्ति) हुई उसके नाम पर भी गोत्रों का प्रचलन हुआ। लेकिन ऋषि गौत्र में कोई परिवर्तन नहीं आया।

ऋषि गोत्र एवं प्रवर

प्राचीन ऋषियों के नाम पर ही वश का सम्बन्ध जोड़ा जाता है। अन्तराल में उसी ऋषि के नाम पर ही उस संतान को पुकारा जाने लगा। इस तरह वश परम्परा आरंभ हो गई तथा ऋषि गोत्र बन गये। अपने-अपने वंश की शुद्धता एवं भिन्नता प्रदर्शित करने के लिये प्रवर बनाये गये। गोत्र व प्रवर से ही वर्ण की पवित्रता व स्थिरता जानी जाती है। रजवीर्य की शुद्धि मूल वर्ण व्यवस्था जिसमें जन्म से वर्ण मानने की दृढ आस्था है। इससे बोध होता है।

पदवी (आस्पद)

ऋषियों ने जिस वेद का गहन अध्ययन किया तथा उस पर अपने विचार (संहिता) लिखी वह उसी ऋषि के नाम से जाने जाते हैं। उनको उनकी संहिता के नाम पर पदवी दी गई। जैसे वेद पाठों को पाठक दो वेद पढने वाले द्विवेदी तीन वेद पढने वाले त्रिपाठी तथा चतुर्वेदी आदि समझना चाहिये।

शाखा

कालांतर में मानव की ज्ञान शक्ति कम होती गई। ऋषियों ने वेद मन्त्रों को सुगम व सरल बनाया उन्होंने अपने शिष्यों को मूल संहिताओं में से किसी एक देवता के मन्त्र एकत्रित किये इस सरह देवता क्रम से, मन्त्र क्रम से विषय व छन्द क्रम से स्मृति मन्त्र क्रम से अलग अलग संहिताएं रची जो शाखा कही गई। वेदों की 1130 शाखाऐ पायी जाती हैं। इनमें प्रमुख ऋग्वेद की शाकल और बाह्यकल शाखा, यजुर्वेद की माध्यान्दिनीय व सामवेद की कौथुमी अथर्ववेद की सौनक एवं मौदालयनी शाखा है।

सूत्र

सूत्र से तात्पर्य यज्ञोपवीत सूत्र से है। सूत्र पाँच प्रकार के माने जाते हैं 1. आश्वालायन 2. कात्यायन 3. आपस्तव 4. बोधायन 5. द्राक्षायन। मैथिलों का कात्यायन सूत्र है।

(मनु अध्याय 1 श्लोक 88 पर)

पाठकों से निवेदन है कि वे भली भांति अध्ययन कर इस पर पर मनन करें तथा अपने नाम के आगे ऋषि गोत्र पदवी अथवा झा ओझा व शर्मा ही लिखें अन्य उपमान न लिखें एवं अपनी सन्तान को भी ऐसा लिखने को प्रेरित करें।

ब्राह्मणों का प्रसार

वैदिक ग्रन्थों के अनुसार सम्पूर्ण जगत का रचियता ब्रह्मा माना गया है। इसके आधार पर कहा जाता है कि पहले एक ही वर्ण था। धीरे-धीरे जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ परिवार प्रथा का जन्म हुआ। इस प्रथा से मानव दृष्टि कोण में अन्तर आने लगा। आवश्यकताओं के अनुसार कार्यो में विविधता आई फलत: परिवार के मुखिया में सदस्य के बौद्धिक शारीरिक व मानसिक रुचि के अनुसार कार्यो का विभाजन कर दिया। इस तरह हमने देखा कि जहाँ एक वर्ण था वह अब चार भागों (वर्णो) में बंट गया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र प्रथम के सदस्य जो विद्या में रुचि रखते थे धर्म कर्मो में अग्रणी हुए जिनका जीवन सादा सरल व संतोषी शांत स्वभाव व विद्वान हुये ब्राह्मण कहलाये द्वितीय जो शक्ति सम्पन्न हुये शस्त्र एवं शास्त्रों में अधिक रुचि रखते थे तथा दूसरो की रक्षा करने में समर्थ थे क्षत्रिय कहलाये तीसरे जो खेती पशुपालन व्यापार करने में सक्षम हुये वैश्य कहलाये चौथे वे जो शारीरिक व वैदिक दृष्टि से कमजोर थे कठिन कार्य में असमर्थ रहे उन्होंने लोक सेवा का भार गृहण किया इस प्रकार वे शूद्र कहलाये परन्तु चारों वर्णो का पारस्परिक व्यवहार एक परिवार जसा हा बना रहा।

आगे चलकर जहाँ एक और मानव गतिशीलता व क्षेत्र का बिस्तार होता गया दूसरी ओर वहीं पारस्परिक दूरियां बढ़ती गई परिणामस्वरूप एक बर्ण दूसरे से अलग होता गया। पारिवारिक सम्बन्ध टूटने लगे। पारस्परिक घृणा द्वेष और ईर्ष्या ने जन्म ले लिया।

ब्राह्मण वर्ण जो पहले एक था अब दो वर्गों में बंट गया गौड और द्रविड इसो प्रकार क्षत्रिय बैश्य और शूद्र भो अनेक वर्गों में विभक्त हो गये। आज उनकी गिनती भी सम्भव नहीं है।

कालान्तर में क्षत्रियों ने समूचे देश में अपने बाहुवल से अलग-अलग राज्य स्थापित किये। उनकी अपनी अलग-अलग व्यवस्था व सीमाएँ थी। राजा बडे वीर, उदार, धर्मात्मा दान वीर युद्ध प्रिय न्यायकर्ता व ब्राह्मण भक्त थे उन्होंने विद्वान ब्राह्मणों को अपने अपने राज्यों में बसाया उनकी आजीबिका के लिए ग्राम दान में दिये। राजगुरु की पदवी से सम्मानित किया। धार्मिक कार्य हो अथवा राजनैतिक कार्य बिना गुरु की मंत्रणा के नहीं किया जाता था। इस प्रकार राजाओं के यहाँ ब्राह्मणों को पूण सम्मान प्राप्त था।

ब्राह्मण विद्या के साथ ही धर्म व राजनीति एवं धनुर्विद्या के प्रकान्ड पंडित होते थे राजपुत्रों को विद्या पढ़ाना राजनीति व धनुर्विद्या की शिक्षा देना उनका प्रमुख कार्य होता था।

ब्राह्मण जिन-जिन राज्यों में स्थायी बस गये। अब उन्हीं राज्यों के नाम पर पुकारे जाने लगे। जैसे भारत के उत्तरी भागों में बसें सारस्वत गौड़ कान्य-कुब्ज उत्कल व मैथिल राज्य विन्ध्याचल के दक्षिणी भाग में बसे कर्नाटक महाराष्ट्र गुर्जर एवं द्रविड राज्य। इन्हीं नामों से प्रसिद्ध हुये।

मिथिला राज्य में बसे ब्राह्मण मैथिल ब्राह्मण कहलाने लगे।

श्रीमद् भागवत दशम स्कंध अध्याय 81 से 86 में मैथिलों के प्रसार के सम्बन्ध में इस प्रकार का प्रसंग आया है।

राजा निमि को दशवी पीढी में बहुलाश्व नाम के राजा हुये वे श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे। एक समय श्री कृष्ण ने

मिथिला की यात्रा की राजा तथा श्रुति देव नामक ब्राह्मण ने श्री कृष्ण का बडा सत्कार किया। और कुछ दिन अपने यहाँ ठहराया। समयोपरान्त भगवान कृष्ण द्वारिका वापिस चले गये और साथ में कुछ ब्राह्मण भी लेते गये। द्वारिका में कृष्ण ने उन ब्राह्मणों को अपने राज्य में बसाया सिद्धपुर, बडनगर व ओझापुर में यह ब्राह्मण बस गये। सिद्धपुर में बसे ब्राह्मण सामवेदी बडनगर में बसे शुक्ल यजुर्वेदी और ऊंझापुर में बसे तांत्रिक ओझा कहलाये इस तरह गुजरात राज्य में मैथिल ब्राह्मणों का प्रसार होता गया।

ग्राम जमाहर (स्टैट ग्वालियर) के पुजारी श्री कधर दास ओझा के पास एक हस्त लिखित पुस्तक है जिसमें लिखा है। कि मुगल बादशाह अकबर के दरबार में तानसेन नामक प्रसिद्ध गवैया थे। एकबार बड नगर के दो गायक लौने और सलौने नाम के मैथिल ब्राह्मण कुमार मुगल दरबार में पहुँचे।

उन्होंने भी अपनी कला का प्रदर्शन किया। इनकी कला के आगे तानसेन का गायन भी फीका रहा। बादशाह ने इसको अपना अपमान समझा और हुकुम दिया कि इनको कत्ल कर दिया जावे भयभीत होकर बडनगर के अनेक ब्राह्मणों ने देश के भीतरी भागों में छिपकर शरण ली कुछ कत्ल किये गये, कुछ लोगों ने अपने कार्य व्यवहार में ही अन्तर कर लिया इस तरह देश के भीतरी भागों में प्रसार होता गया। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक कारण भी पाये जाते हैं। राज्याश्रय के अभाव में जीवन निर्वाह की कठिनाइयों के कारण भी अलग-अलग स्थानों पर सुविधानुसार जाकर बसते गये।

मिथिला क्षेत्र भी अनउपजाऊ, अविकसित व अनावृष्टि के कारण कठिनाइयों से ग्रसित रहा हैं। इस कारण भी मिथिला

छोड़कर देश के भीतरी भागों में बसे मैथिल ब्राह्मण उदरपूर्ति के विविध धन्धे स्थान की सुविधानुसार अपनाने लगे पर अपनी संस्कृति को न भूले और जहाँ भी स्थायी बन कर रहे अपने ग्रामों के नाम मिथिला के साम्य पर ही रखे गये जैसे मगरौनी आमौल आदि। आज भी मिथिला में इस नाम के ग्राम हैं।



-: मैथिल ब्राह्मणों के भेद :-

यह लोक प्रसिद्ध है कि जो जाति जिस प्रांत में रहती है। वह उसी प्रांत के नाम से पुकारी जाती है। जैसे कान्य कुब्ज के वासी कनोजिया कान्य कुब्ज महाराष्ट्र के निवासी महाराष्ट्रा आदि इसी प्रकार "मिथलायांभव मैथिल" अथवा "मिथिलायां जानों मैथिल:" मिथिल में उत्पन्न हुआ मैथिल कहलाया।

मैथिल ब्राह्मणों के चार भेद प्रमुख हैं। मैथिल, श्रोती योग्य, चंगेले।

❀ नाम व गोत्र में अन्तर ❀

भाषा के बदलने के कारण गोत्र व नामों में अन्तर आ गया धीरे-धीरे भाषा बदलती रहती है। शब्द भ्रंश होते रहते हैं। जैसे ब्राह्मण का अपभ्रंश बाहमन बिरहमन बिराहमन ब्राहमन आदि अनेक अपभ्रंश हो गये। ऐसे ही यह सब समय के अनुसार बदलते गये जैसे श्रोती से सोती बोले जाने लगे। ऐसे ही ओझा उपाध्याय का अपभ्रंश हैं। अर्थात उपाध्याय शब्द में 'प' है उसका लोप क ग च द व प्रायोलुप इस प्राकृतव्याकरण के सूत्र से हुआ तो उ आध्याय ऐसा रहना था बिगडकर ध्या के स्थान

पर ओझा हो गया। और प का भी उच्चारण दोष से लोप हो गया। तब अ उ झा ऐसा रह गया। जैन सम्प्रदाय में यह शब्द ऐसा ही प्रचलित हैं। नमो उ अ झा ण् और कहीं-कहीं पर नमो उपज्झाण ऐसा ही पाया जाता है। लेकिन बोल चाल के हेर फेर से उस शब्द का ओझा हो गया। और फिर भी अपभ्रंश हुआ तो ओ भी उड गया केवल 'झा' ही रह गया। यह दोंनों शब्द झा और ओझा मैथिल ब्राह्मणों में प्रचलित हैं।

आगे चलकर इन्हीं लोगों ने जहाँ-जहाँ जाकर निवास किया और कुछ काल में उनकी उपाधि भी बदल गई जसे मथुरा में रहने वाले मथुरिया आदि।

कुछ मुख्य-मुख्य बातें जो सामान्यत: लोगों के पूछने में आती है इनकी जानकारी देना आवश्यक है वह इस प्रकार से है—

कौन ब्राह्मण पंच गौड़ में से है उत्तर मैथिल ब्राह्मण

कौन वंशी	—	वशिष्ठ वंशी 1
कौन गोष्ठ	—	मिथिला गोष्ठ
कौन वेद	—	शुक्ल यजुर्वेद
कौन संहिता	—	सौवर्ण प्रेक्ष संहिता
कौन गौत्र	—	वशिष्ठ गौत्र 2
कौन शाखा	—	मौदग्लायनी मृद्गलायनी शाखा
कौन सूत्र	—	कात्ययनी सूत्र
कौन शिखा	—	वेदनी शिखा
कौन कुल	—	गौड कुल

1, 2, जिस ऋषि की सन्तान होती है उसी के नाम उस वंश का उच्चारण किया जाता है। जैसे भारद्वाज ऋषि का नाम हैं तो भारद्वाज वंशी होगा इसी प्रकार गौत्र समझना चाहिए।

के प्रवर	—	वशिष्ठ शक्ति पाराशर 3
कौन देवी	—	गायत्री देवो वशिष्ठ स्थापिता 4
कौन देवता	—	नारायण देवता 5
कौन उपासना		अखण्ड उपासना
कौन मन्त्र		नारायण मन्त्र
कौन अस्त्र		ब्रह्मास्त्र धारण
कौन वृत्ति		ज्ञान बिज्ञान
कौन बीज		अग्नि बीज
कौन माला		रुद्राक्ष तुलसी माला
कौन पदवी		मिश्र
कौन कर्म		षटकर्म पढ़ना पढ़ाना यज्ञ करना यज्ञ कराना दान करना दान कराना
कौन सूक्त		ब्रह्म सूक्त

3 सब ऋषियों के प्रवर अलग-अलग हैं जिस ऋषि के सामने जो प्रवर दिए गए हैं उस ऋषि गोत्र के प्रवर वही माने जावेंगे।

4, 5 देवी एवं देवता सब के अलग-अलग हैं जो ऋषि गोत्र गोत्र के सामने दिए गए हैं वही समझ लेना चाहिए इसी प्रकार देवी भी समझना चाहिए।

इस प्रकार से मैथिल ब्राह्मणों की जानकारी एवं उससे पूछे जाने वाले संभावित मुख्य प्रश्न एवं उनके उत्तर दिये गए हैं।

3 सब ऋषियों के प्रवर अलग-अलग हैं जिस ऋषि के सामने जो प्रवर दिए गए हैं उस गौत्र के प्रवर वही माने जावेंगे।

4, 5 देवी एवं देवता सबके अलग-अलग हैं जो ऋषि गोत्र के सामने दिये गये हैं। वही समझ लेना चाहिए इसी प्रकार देवी भी समझना चाहिये।

❀❀

—: ब्राह्मण कर्म :—

अध्ययनमध्यापनं यजनं याजनन्तथा ।
दांनम्प्रतिगृह चैव षटकर्मण्य प्रजन्मनः ।।

(मनु० अ० 1)

वैदिक ग्रंथों में गुण कर्म एवं स्वभावानुसार चारों वर्णो के कर्म निश्चित किये हैं विद्या पढ़ाना पढ़ना, यज्ञ करना, कराना, दान देना व लेना ये छः कर्म ब्राह्मण वर्ण के हैं। प्रजा की रक्षा करना दान देना, यज्ञ कराना धर्म शास्त्रों का अध्ययन करना क्षत्रिय के कर्म हैं। कृषि पशुपालन वेद पढना यज्ञ करना व्यापार व्यवसाय करना वेश्य के कर्म हैं। और शूद्र का कर्म राग द्वेष रहित तानों वर्णो की सेवा करना है।

ब्राह्मण के 6 कर्मो में 3 कर्म वेद पढ़ना यज्ञ करना दान देना यह स्वधर्म है शेष तीन वेद पढ़ाना, दान लेना, यज्ञ कराना वृत्ति के कर्म हैं। जिनके द्वारा वह अपने परिवार का पालन करता रहे।

तपस्तरत्वा सृजद्धब्रह्मा ब्राह्मामणान्वेद गुप्तये।
सर्वस्य प्रभवो विपन श्रुत्वाध्यपन शीलिनः ।।
तस्यः क्रिया परा श्रेष्ठातेम्यो च्यध्यात्मचिन्तका:
न विषया प्रवल यातप्सा वापि पात्रताः ।
यत वृत मिमे चौप तद्धि पात्रम्प्रकीर्तितम ।।

यावज्ञल्के स्मृति दान प्रे श्लोक 1, 3

ब्रह्मा ने वेदों की रक्षा के लिये ब्राह्मण वर्ण के कर्म निश्चित किये। इस वर्ण का कर्म था कि वेद श्रुति स्मृति आदि ग्रन्थों में निपुणता प्राप्त कर धर्म की रक्षा करें एवं शील सन्तोष व सदाचार सदगुण युक्त जीवन बनावे पर दान पात्र बनने की अभिलाषा न करें। दान लेने का अधिकार तो केवल उसी को है जो तपस्वी सदाचारी व विद्वान हैं अन्य को नहीं।

व्रत होमे रपेन्येनो याजनाध्यायनैः कृतम् ।
पति ग्रहनिमित्तन्तु त्यागेन तप सेवः चं

(मनु० अ० 10 श्लोक 11)

ऐसे ब्राह्मण जो धन लेकर यज्ञ कराते हैं अथवा विद्या पढ़ाते हैं उनका प्रायश्चित जप तथा होम (यज्ञ) करने से होता है परन्तु दम्भ (प्रति ग्रह) से किये गये पाप का प्रायश्चित त्याग तथा तप द्वारा ही माना गया है।

शमो दम तप शौचं क्षांतिरार्जवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्म कर्म स्वभाव जय ।।

(गीता अध्याय 18 श्लोल 42)

वेदों और स्मृति में भी लिखा है कि क्षमा दया (सबके साथ यथा योग्य व्यवहार) तप विद्या बृद्धि और बल के अनुसार प्राप्त धन से संतोष करके रहना अकर्मण्य होकर न बैठना भी (बुद्धि को

दुष्कर्म में न जाने देना) किसी कठिन परिस्थिति में न घबराना ब्रह्मचर्य उदारता गुरु माता पिता आचार्य आदि की सेवा करना उनकी आज्ञा का पालन करना सब प्रकार की विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करना (सम्पर्क ज्ञान) धारना स्मृति चोरी न करना आदि उच्च कर्म करना चाहिये इनके बिपरीत जो कर्म करता है वह अपने कुल से पतित हो जाता है।

प्राचीन समय में देश में अनेक क्षत्रिय राज्य थे उनकी अपनी अलग-अलग सीमाए थी कोई भी धार्मिक कार्य ब्राह्मण के बिना सम्भव नहीं होता था ब्राह्मण भी बड़े विद्वान तपस्वी सन्तोषी धर्म व राजनीति में पारंगत होते थे राजपुत्रों को युद्ध विद्या सिखाना धर्म व राजनीति की शिक्षा देना उनका प्रमुख कार्य था राजाओं ने उदारतापूर्वक उनको ग्राम दान किये तथा उनका बड़ा सम्मान किया जाता था परन्तु कालांतर में जैन धर्म व बौद्धधर्म प्रभाव के कारण ब्राह्मणों का सम्मान पूर्व जैसा न रहा राजनीति की कुचक्र के कारण वे अपनी विद्या भी गवा बैठे आगे चलकर देश पर भयंकर विपत्तियों का पहाड़ टूटा विदेशी आतताई शासकों ने हमारी सभ्यता सस्कृति व कला को भी नष्ट कर दिया परिणाम स्वरूप अल्पज्ञ ब्राह्मण रह गये तथा ऐसे मूख ब्राह्मणों की आजीविका दान (भिक्षा) पर निर्भर हो गई। आज भी हमारे देश में अनेकों ऐसी जातियां हैं जिन्होंने भिक्षा वृत्ति को ही अपना व्यवसाय बना लिया है।

यस्यान्नयो नरोडश्नीति बुद्धिस्तस्य तु तादृशी।
अंधकारं दीपकोस्ति दीपा द्धर्षति कज्जलम्॥

अर्थात् जो जैसा अन्न खाता है उसकी बुद्धि वैसी ही बन जाती है। जैसे दीपक अंधकार का नाश करता है (खाता है) लेकिन उससे काजल निकलता है।

अब प्रश्न है समयानुसार क्या कर्म उपयुक्त हैं ?

आज सम्पूर्ण राष्ट्र वैज्ञानिक दौड़ में आगे निकलना चाहते हैं। नित्य नये अविष्कारों से मानव मन में अनेक इच्छा आकांक्षाओं ने जन्म ले लिया है। आध्यात्मिक गुरु कहलाने वाला भारत भी इस दौड़ में आगे बढ़ने के लिये आतुर है तथा अनेक दिशाओं में महत्वपूर्ण खोज में संलग्न रहकर नवीनता प्रदान कर रहा है। हमारे प्राचीन धर्म ग्रन्थ भी इस ओर प्रेरणा दे रहे हैं देखिये—

यजुर्वेद अध्याय 3 मंडल 20 में लिखा है कि मानव कभी अकर्मण्य होकर न बैठे गुण कर्म स्वभावानुसार कर्म करता रहे यही उसका धर्म है यही कर्म है।

शस्त्र विद्या स्वभावेन सर्वाभ्यो स्तिमही-पसी।
शास्त्रेण रक्षिते राष्ट्रे शास्त्र चिन्ता प्रवर्तते॥

शस्त्र विद्या स्वभाव से ही सम्पूर्ण विद्याओं में बड़ी है क्योंकि शस्त्र से रक्षित राज्य में ही शास्त्र का चिन्तन होता है।

केवल किताबी ज्ञान से ही किसी बिषय में निपुणता नहीं पायी जा सकती और न ही जीवन यापन कर सकते हैं।

केवल पढ़ने से ही कोई सफल डॉक्टर, इंजीनियर या वैज्ञानिक बनना चाहे तो वह भी असम्भव है, अधूरा है उसको पूर्णता (दक्षता) पाने के लिये प्रयोगशाला में कार्य करना पड़ेगा नये नये प्रयोगों से अनुभव प्राप्त करना होते हैं वह अपने कार्य में दक्ष होकर एक सफल डॉक्टर, इन्जीनियर या वैज्ञानिक बन पायेगा। अन्यथा नहीं इसलिये पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ कर्म करना भी आवश्यक है।

आज के व्यस्त जीवन में मुख्य समस्या जीवन को सुखी व सम्पन्न बनाने की है बदलती परिस्थितियों में कौन सा व्यवसाय अपनाया जाते

मनुस्मृति अध्याय 10 श्लोक 116-17 में आजोबिका के लिये 10 कर्म बनाये हैं विद्या (शिल्प) नौकरी, सेवा, पशु-पालन दुकान, खेती, संतोष भिक्षा, और ब्याज यह वृत्ति कहे गये हैं।

महाभारत शांति पर्व में राज्य धर्मानुशासन पर्व के 78 अध्याय में लिखा हैं—

युधिष्ठिर ने पितामह भीष्म से पूछा है भारत श्रेष्ठ आपने कहा ब्राह्मण आपत्ति काल में क्षत्रिय वृत्ति अपना सकता है अब आप यह भी बतलाइये यदि ब्राह्मण क्षत्रिय वृत्ति (कर्म) करने में समर्थ न हो तो क्या करें। इस पर पितामह ने कहा ऐसी स्थिति में वह वैश्य कर्म कर सकेगा पर ध्यान रहे कि वह भिक्षा वृत्ति न करें। क्योंकि भिक्षा वृत्ति करने से उसके कुल और सम्मान दोनों का पतन हो जावेगा।

इस आधार पर ब्राह्मण को समयानुसार अपनी आजीविका के साधनों में परिवर्तन लाना चाहिए लेकिन शास्त्र विरुद्ध कार्य भी न करना चाहिए। ऊपर वर्णित कार्य वैश्य वृत्ति के हैं विपत्ति काल में उनको अपनाना शास्त्र विरुद्ध नही है।



—: संस्कार :—

संस्कृति शब्द का उद्गम संस्कार से है जिसका अर्थ है शुद्ध करना, साफ करना, चमकाना, भीतरी रूप को प्रकाशित करना जिस प्रकार एक स्वर्णकार स्वर्णपिण्ड को परिस्कृत कर उसमें से अनेक आकर्षक आभूषण बनाकर उसके मूल्य में वृद्धि करता है, अथवा खान से निकले हीरक मणि आदि में चमक या शोभा में

अभिवृद्धि कर दी जाती है उसी प्रकार मानव संस्कारों द्वारा अपने शरीर व आत्मा का पूर्ण विकास करता है।

प्राकृतिक विधान के अनुसार संस्कार की हुई पद्धति ही संस्कृति है इसी संस्कृति के एक अंश को हम सभ्यता कह सकते हैं।

संस्कृति अनुभव जन्य ज्ञान के और सभ्यता बुद्धि जन्य ज्ञान के आधार पर निर्भर है। अनुभव जन्य ज्ञान नित्य और बुद्धि जन्य ज्ञान परिवर्तनशील होता हैं।

किसी देश काल की सभ्यता किसी के लिये अहितकारी भी हो सकती है किन्तु संस्कृति सर्व देश व सर्व काल में हितकारी होती है। संस्कृति किसी मानव की उपज नहीं खोज है उसी कारण वह नित्य है। उसका आदर स्वयं का विकास और अनादर पतन का कारण है।

संस्कार किसी देश या जाति की आत्मा है। उससे उनके उन सब संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने सामाजिक जीवन के आदर्शों का निर्माण करता है। वह विशिष्ट समूह के उन उदात्त गुणों को सूचित करती है जो सर्वत्र में पाये जाते हैं।

धर्म के अनुसार मनुष्य के जो संस्कार होते हैं उनमें कुछ क्रियायें अनिवार्य होती हैं। फिर भी संस्कारों का उद्देश्य विशेषत: मानसिक व आध्यात्मिक होता है उसमें रूढियों व बाहरी बातें गौण होती हैं मुख्य लक्ष्य यह होता है कि जिस व्यक्ति का संस्कार किया जाये उसके मन और आत्मा पर अच्छा प्रभाव पड़े। जब यह कहते हैं कि अमुक व्यक्ति के संस्कार अच्छे हैं तब हमारा लक्ष्य उस व्यक्ति के बाहरी व्यवहार से उतना नहीं होता जितना उसकी सद्भावना सचरित्रता तथा तन मन व आत्मा के विकास

से। उनकी प्रेरणा से ही वह विविध सत्कर्मों द्वारा अपने सद्गुणों का परिचय देता है। इसीलिये हम इसको प्रेरक शक्ति भी मानते हैं

ममता मानव का स्वभाविक गुण है। संस्कार युक्त व्यक्ति की ममता केवल परिवार तक ही सीमित न रहकर सम्पूर्ण के कल्याण के लिये होती है यही संस्कारों की विशेषता है।

प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में वर्ण व्यवस्था कहीं कर्म के आधार पर और कहीं जन्म को आधार मानकर बनाई गई है। मानव मन पर प्राय: दो बातों का प्रभाव पड़ता है पहला पैत्रिक गुण तथा दूसरा वातावरण का। संस्कार ही एक ऐसा तत्व है जो नीच जीव को भी उच्च पदवो पर बिठा सकता है और इसके अभाव में उच्च वर्गीय भी नीच बन सकता है।

"जन्मना जायते सूद्र: संस्कारों द्विज उच्चत:" द्विज का अर्थ है दुबारा जन्म लेना। बाईबिल में ईसामसीह का एक वाक्य आया है कि मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूँ जब तक मनुष्य का दुवारा जन्म न हो वह परमात्मा के राज्य के दर्शन नहीं कर सकता। यहाँ दुवारा जन्म से तात्पर्य मृत्यु के बाद पुर्नजन्म नहीं है वरन इसी जन्म में आत्मा की अवस्था को सुधारने से है और परमात्मा के राज्य से मतलब सत्य व पवित्रता के उन दिव्य तथ्यों से है जिनका आलोक अपनी निज की अन्तरात्मा में प्रकट होता है, ईसा मसीह के अनुसार परमात्मा का राज्य स्वयं तुम्हारे ही अन्दर है। सेन्ट लूक 17/21 अत: संस्कार का अर्थ एक ऐसी शिक्षा दीक्षा है जिससे मानव जीवन सुधरे।

महाभारत बन पर्व में एक प्रसंग है—

हे युधिष्ठिर वर्ण की कोई विशेषता नहीं हैं। यह सम्पूर्ण विश्व एक ईश्वर का रचा हुआ है। पहले एक ही वर्ण था पर

आगे चलकर कर्म व क्रिया के भेद से चार वर्णों में बंट गया यदि जन्म के आधार पर वर्ण माना जावे तो समस्त मानव मात्र का जन्म एक ही रीति से होता है सब में एक ही प्रकार की इन्द्रियां होती हैं इन्द्रियों में कोई भिन्नता नहीं पायी जाती। प्राणी अपने स्वभावानुसार ब्राह्मण, क्षत्रित्र, वैश्य और शूद्र की पदवी पाता है। यदि शूद्र भी उत्तम स्वभाव गुण सम्पन्न हो तो ब्राह्मण हो जाता है और यदि ब्राह्मण अपने कर्मों से गिर जावे तो शूद्र से भी नीच माना जाता है।

मनुष्य जन्म से शूद्र ही माना जाता है परन्तु उपनयन संस्कार मे वह द्विज कहलाता है इससे यह सिद्ध हुआ कि वर्ण बनाना संस्कार वाला पदार्थ है।

ब्रह्मा क्षत्रियविद् शूद्रावर्णास्त्वाधास्तयों द्विजा:।
निषेकाधा: श्यंशानान्तास्तेषां वैमंत्रत क्रिया:॥

(याज्ञ० स्मृति० यध्याय 1 श्लोक 10)

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र यह चार वर्ण हैं इनमें पहले तीन द्विज कहलाते हैं। इन तीनों के गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्ठ पर्यन्त तक वेदोंक्त मन्त्रों द्वारा 16 संस्कार होते हैं।

मातुयंदग्ने जायन्ते द्वितीयं यौ जिवन्धनात्।
ब्राह्मण क्षत्रिय बिशस्तमादे ते द्विजा: स्मृता:॥

(याज्ञ० स्मृति० अध्याय 1 श्लोक 39)

अब यह स्पष्ट हो गया कि बिना उपनयन संस्कार के कोई द्विज कहलाने का अधिकारी नही होता और न हीं वैदिक कर्मों का अधिकारी इस लिए संस्कारों का यथा योग्य और समय पर होना आवश्यक है।

संस्कार 16 इस प्रकार हैं।

1. गर्भाधान 2. पुन्सवन 3. सीमांतोनयन 4. जातकर्म 5. नामकरण 6. निष्क्रम 7. अन्नप्राशन 8. चूडाकरण 9. कर्णवेध 10. उपनयन या यज्ञोपवीत 11. वेदारंभ 12. समावर्तन 13. विवाह 14. बानप्रस्थ 15. सन्यास 16. अन्त्येष्ठ संस्कार।

यज्ञोपवीत संस्कार

गर्भाष्टमें प्रकुर्बीत ब्राह्मणस्योपनायनम्: ।
गर्भाच्चिकादशे राज्ञो गर्भाच्च द्वादशे विशा: ॥
(मनु० स्मृति० अ० 2 श्लोक 36)

इसके अनुसार ब्राह्मण का गर्भ से आठवे वर्ष क्षत्रिय का ग्यारहवे वर्ष वैश्य का बारहवे वर्ष यह संस्कार होना चाहिये परन्तु किसी कारण बश यदि उपर्युक्त उम्र में उपनयन संस्कार न कराया गया हो तो मनुने इसके लिए ब्राह्मण की आयु 16 वर्ष क्षत्रिय की आयु 20 वर्ष और वैश्य की आयु 24 वर्ष की निश्चित कर दी है।

याज्ञवल्किक स्मृति में लिखा है कि समय पर यज्ञोपवीत संस्कार न कराने से वह धर्म कर्म से च्युत हो जाता है परन्तु आगे व्यवस्था दी है कि यदि वह व्रात्य सोम० नामक यज्ञ करावे तो उपनयन संस्कार का अधिकारी हो सकता है।

प्राय: देखा गया है कि अधिकांश परिवारों द्वारा अपने बालकों का उपनयन संस्कार विवाह के पूर्व वधू के दरबाजे पर कराया जाता है तथा विवाहोपरांत कुछ समय बाद साधना न कर सकने के बहाने नीचे उतार कर रख दिया जाता है जो सर्वथा अनुचित है। शास्त्र सम्मत भी नहीं है।

आर्य जाति तथा आर्य संस्कृति अन्य सभी श्रेष्ठ कही जाने वाली संस्कृतियों में प्राचीन व अति श्रेष्ठ मानी जाती है। अनुभवों के आधार पर प्रष्थापित कार्य एवं उसके नियम तथ्य पूर्ण होते हैं हमारा धार्मिक तथा नैतिक कर्तव्य हो जाता है कि हम यथा सम्भव उनका पालन करते रहें।

नित्य के मन्त्र

❀ जल प्रणाम मन्त्र ❀

ओं सलिलस्य मुख द्रषाद्विश्नुरूप नमस्तुते।
क्रियाथं महगृहामि आयो देव्य पुनस्तुयां ॥

❀ स्नान मन्त्र ❀

ओं गंगेच यमुने चेव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिंधु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिकुरु ॥

❀ चन्दन लगाने का मन्त्र ❀

ओं चंदनं वन्दिते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम्।
आपदा हरते नित्यं लक्ष्मी वस्तः सर्वदा ॥

❀ सूर्य को अर्घ देने का मन्त्र ❀

एहि सूर्य सहस्यांशी तेजो राशे जगत्पते।
अनु कंणाहमे कृत्वा अर्घ्य ग्रहण दिवाकर॥

❀ सूर्य के जपने का मन्त्र ❀

ओं नमो भगवते आदित्याय वरिष्टाय वरेण्याय।
ब्रह्मणे लोक गर्त्रे ईशानाय पुराणाय पुराण ॥
पुरुषाय सामाप ऋग्यजुरथर्बाय ओं भू ओं भुवः॥
ओं स्वः ओं महः ओं जनः ओं तपः ओं रूपं ब्राह्मणे आदित्याय नमः

❀ ब्रह्म गायत्री ❀

ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो ।
देवस्य धीमहिधियो योनः प्रचोद्यात् ।।

❀ सर्व ग्रह निवारण मन्त्र ❀

ओं ब्रह्मा मुरारी त्रिपुरान्तकारी भानु शशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतो सर्वे ग्रहा शांति करा भवन्तु ।।

❀ भगवान को प्रणाम ❀

नमो ब्रह्म देवाय गौ ब्राह्मणहितायच ।
जग्धिताय कृष्णाये गोविन्दाय नमौ नमः ।।

निम्नलिखित मंत्र जब तर्पण करे तब नित्य काम में लाना चाहिए

ओं नमौ नारायणाय

इस मूल मन्त्र से जल में तीर्थ कल्पना करें।

❀ गंगा आवाहन मन्त्र ❀

विष्णु पाद प्रसूतासी वैष्णावी विष्णु देवता,
पाहि नश्चेन सस्तस्मादा जन्म मरणान्तिकात् ।
तिस्नः कोटयोर्द्धं काटिश्च तीर्थानां वायुरब्रवीत,
दिवि भुव्यंरिक्षेत तामिते संति जान्हिवे ।।
नन्दिनीत्येव ते नाम देवेषुनलि नीतिच,
क्षमा पृ-वीच विहंगा विश्व काया शिवास्मृता ।
विद्याधारी सुप्रसन्ना तथा लोक प्रसादिनी,
हे महात्यां जान्हवीच शांता शांति प्रदामनी ।।

फिर इस मन्त्र से स्नान करें :—

अश्व कांते रथर क्रांते विष्णु क्राते वसुंधरेः,
मृत्तिके हरमे पापं यन्यया दृष्कृतं कृतम् ।
उद्दतसिव राहेण कृष्णोनशत वाहुना,
नमस्ते सर्व लोकानाम् वसुधारिणि सुब्रते ।।

देवताओं का तर्पण इस मन्त्र से करें—

देवायस्य स्तथा नागा गंधर्वा प्सरसा गणाः,
तृणः समी सुपर्णाश्च राक्षसा जमकाः सगाः ।
वाप्बाधराजला धारास्तथैवा काशगामिनः,
निराश्चयाश्चये जीवाः पाण कर्मश्स्ताश्च पे ।।
तेषा माप्यायना येत व्दीयते सलिलं मया ।
सनकश्य सनदश्न तृतीययश्च सनातनः ।।
कपिलश्चा सुरश्चव वादुः पंच शिकस्तथा ।।
सर्वते पृप्ति मायां तुम व्दते नाम्बु नासदा ।
मरीचि मंत्रय गिरसौ तुलस्तयं पुलहं कृतम् ।
प्रचेतस्विशष्टं चयगुं नारद मेवच ।।
दुव व्रत कषीन्सर्वान् तर्पपामिति लोदके ।।

इस मंत्र से पितर तर्पण तिल जल हाथ में लेकर तर्पण करें—

ये बांधवा बांधवा तापेन्य जन्मनि बांधवाः ।
ते तृप्तिमखिलायांतु मव्दते नां वुना सदा ।।

इस मंत्र से सूर्य नारायण को अर्ध्य दें ।

नमस्ते विष्णु रूपाय नमो विष्णु सर वायवैं ।
सहस्त्रस्मये नित्यंसप्त शिवाय नमो नमः ।।
नमस्ते सर्व वपुषे नमस्ते सर्व शक्तये ।।
जगत्स्वामिन्नमस्तेस्तु दिव्य चन्दन भूषितः ।
पद्मनाभि नमस्तेस्तु नमस्ते पजुषांपते ।।

इस मन्त्र से सूर्य नारायण को अर्ध देकर तीन प्रदिक्षणा करके फिर विष्णु भगवान का पूजन करें ।

❀ भोजन मन्त्र ❀

प्राणाय स्वाहाः—इस मन्त्र से पांच ग्रास मौनपूर्वक लेकर फिर भोजन करें । भोजन के पश्चात यह मन्त्र पढ़े—

प्राणापान समानाना मुदानं व्यान यो स्तथा ।
अन्नं पुष्टि करं चास्तुभमारुव व्याह हंतं सुखम् ।
अगस्तिरग्निर्वडवानलश्चभुक्तं मयान्नजरयंन्त्वु शेग्म् ।
सुखं चतन्मे परिणाम संभवंगच्छन्त्वरोगखलु वासुदेवः ।
यह मन्त्र पढ़कर अपने पेट पर हाथ फेरें ।

❀ गणेश स्तुति ❀

ओं यं ब्रह्म वेदांत विदोविदंति परं प्रधानं पुरुषंतथान्ये ।
बिस्तोद्गते कारणमीश्वरं वातस्मै नमो विघ्न विनाशनाये ॥

❀ यज्ञोपवीत पहनने का मन्त्र ❀

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्र मजापतेर्यत्सिहज पुरस्तात् ।
आयुस्चमप्यं प्रति मुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥
ओं नमो नारायणाय ।
इस नारायण मन्त्र से सब विघ्न दूर होते हैं ।
ओं नमो भगवते वासुदेवायाय ।
इस द्वादश मन्त्र से सर्व सिद्धि होती है यानी धेन संतान एवं विद्या की प्राप्ति होती है ।

❀ ब्रह्म गायत्री मन्त्र ❀

ओं श्री रामाय नमः
ओं तिष्ठति महाभूताये भूतानं भूमि पालका। ।
भूतानाम वरोधेन ब्रह्म कर्म समाचरेत ॥
ओं आगक्ष वरदे देवित्रिक्षरे ब्रह्म बादिनी ।
गायत्री छंद सामाता ब्रह्म योनि नमोस्तुते ॥
आवाहनं-ओं अस्य वशिष्ठ शापमोचन मन्त्रस्य
वशिष्ठ ऋषि रनुष्टप छन्दः
श्री विष्णुर्देवता वशिष्ठ शाप मोचन जपे विनियोगः ।
अहोमहानुवहुरुपे दिव्य सिध्ये सरस्वती,
अजरे अमरे चैव दशिष्ठ शाप मुक्तो भवशाप मोचन ॥

ओं वाक्ः । ओं प्राणः । ओं प्राणाः । ओं चक्षु । ओं श्रोत्र चक्षु । ओं रुद्रः । ओं ललाटे । ओं नामौः । ओं हृदं । ओं कण्ठे । ओं शिर । ओं शिखा ओं कवच । ओं भूर्भुवः स्वः ओं तत्सवितु-वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोद्यात् ॥

ओं भूः अंगुष्ठाभ्प्रानमः । ओं भुवः तर्जनीभ्यानमः । ओं स्वः मध्यमाभ्यांनमः । ओं तत्सवितुर्वरेण्य अनामिकाभ्यांनमः । ओं भर्गोदेवस्य धीमहि कनिष्ठिकाभ्यानमः धियोयोनः प्रचोद्यात करतलकर पृष्ठाभ्यानमः । ओं भू हृदयानयः ओं भुवः शिर से स्वाहा । ओं स्वः शिखायेवोषट । ओं तत्सवितुर्वरेण्यं कवचायहुमं ओं भर्गो देवस्य धीमहि नेत्रत्रयाय वोषट् ॥ धियो योनः प्रचोद-यात् अस्त्राय फट ॥ इति करन्यास ॥

तत्पादयोरस । जंघा वरेण्यं कटि देशे भर्गो नामौ दैवस्य हृदये धीमहि कंठे धियांनासाग्रे नेत्रेयोत्थनो ललाटे । ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं यहः ओं जनः ओं तप; ओं सत्यं क्षों तत्सवि तुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ओं आपो ज्याति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरीः इति शिखा मंत्र । इति ब्रह्म गायत्री ।

❀ तुलसी प्रणान ❀

वृन्दाये तुलसी देव्यै प्रयायं केशवस्यच ।
विष्णु भक्ति प्रदे देविस्त्थवति नमौ नमः ॥

❀ तुलसी स्नान मन्त्र ❀

गोविन्द वल्लभां देवी भक्त चैतन्य कारिणाम ।
स्नानप्यामिजगद्धात्री विष्णु भक्ति प्रदायिनीम् ॥

❀ आसन मुद्धि मन्त्र ❀

पृथ्वी त्वया धृता लोका दवीत्वं विष्णुना धृताः ।
त्वञ्च धारयमां नित्यं पवित्रं करूं वासनम ॥



श्री ओम प्रकाश झा विनम्र स्वभाव, मिष्ट भाषी, व्यक्तित्ववान, साहसी एवं सफल उद्यमी हैं। वर्तमान मे आप **मैथिल साहित्य मण्डल, मुरार ग्वालियर** के संस्थापक अध्यक्ष हैं। जिसके माध्यम से **मैथिल ज्योति** पत्रिका का सफल प्रकाशन दूर-दूर तक जन-मानस तक पहुँच रहा है। समाज के प्रति अटूट श्रद्धा एवं विश्वास आपकी विशेषता रही है। समय-समय पर समाज हेतु आपने मुक्तहस्त से भरपूर सहयोग किया है। आपकी हार्दिक अभिलाषा है कि **मैथिल ब्राह्मण वंशावली एवं संस्कार** का आलोक समाज के घर-घर तक पहुंचे। इसी भावना से प्रेरित होकर पुस्तक प्रकाशन का सम्पूर्ण व्यय-भार सहर्ष बहनकर अपनी उदारता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसके लिये हम आपके हृदय से आभारी हैं तथा आपके परिवार के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं।

—पं. लालाराम ओझा
संपादक
मैथिल साहित्य मण्डल
मुरार, ग्वालियर

COVER DESIGN & PRINTED BY : **GRAPHIC ARTS**, NAI SARAK, LASHKAR, GWL.